ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 20

वर्ष : 31 मार्गशीर्ष-पौष वि0स0 2076 अंक : 12 दिसम्बर 2019

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

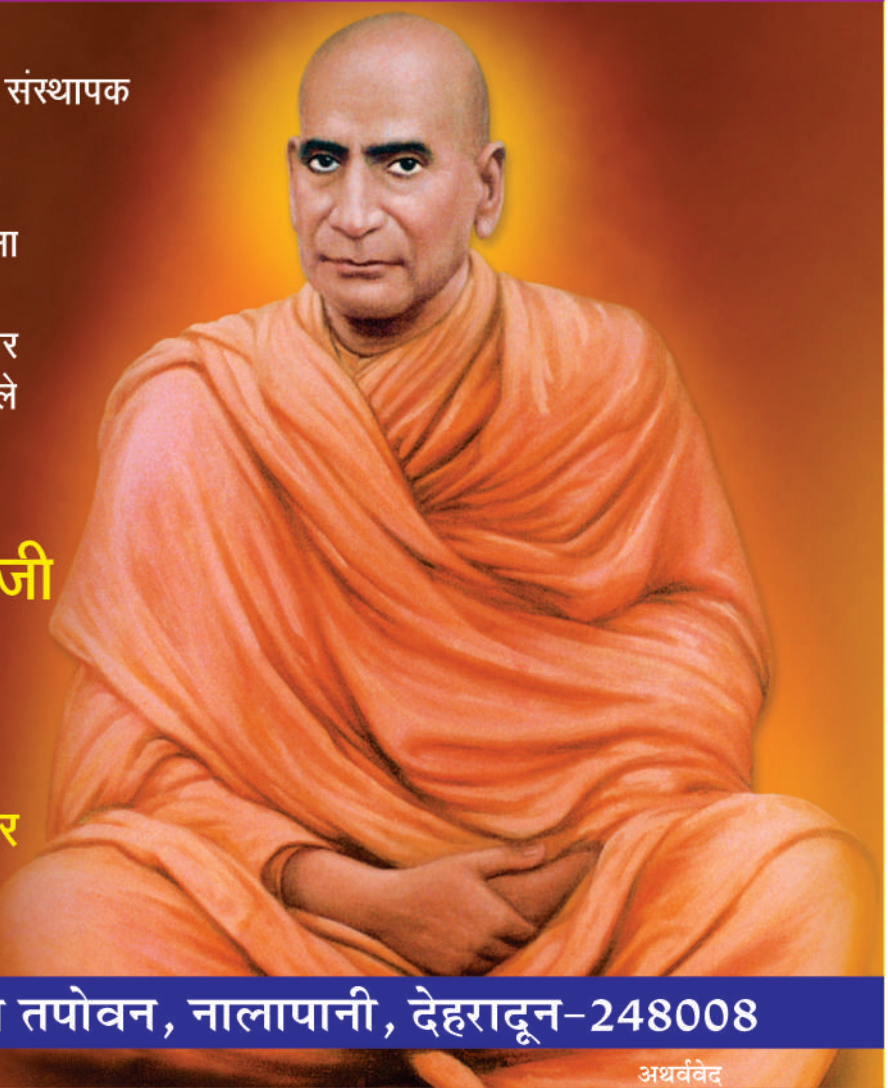

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक
एवं
अपने जीवन को
स्वाधीनता, स्वराज्य, शिक्षा
तथा
वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार
के लिए समर्पित करने वाले

अमर हुतात्मा

स्वामी श्रद्धानन्द जी

(1856-1926)

को

उनकी पुण्यतिथि पर
कोटि-कोटि नमन

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

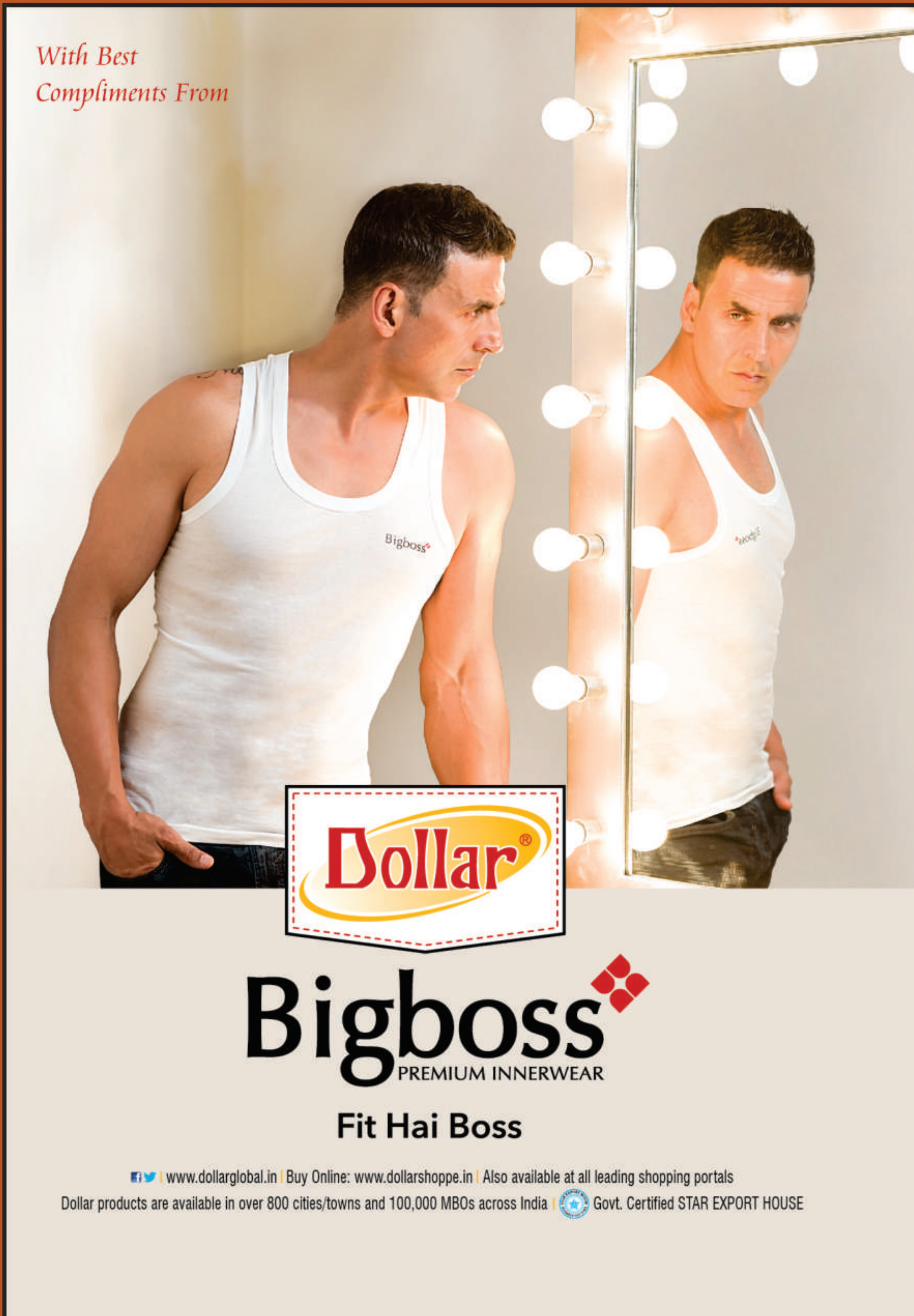
With Best
Compliments From
Bigboss
Dollar®
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–31 अंक–12

मार्गशीर्ष–पौष 2076 विक्रमी दिसम्बर 2019

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120 दयानन्दाब्द : 195

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

मोबाईल : 7310641586

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकार	3
स्वामी श्रद्धानन्द..........	डॉ० कृष्णकांत वैदिक शास्त्री	4
ईश्वर भक्त स्वामी श्रद्धानन्द	मनमोहन कुमार आर्य	7
वेद ईश्वर प्रदत्त...... धर्मग्रन्थ हैं	मनमोहन कुमार आर्य	11
महात्मा वेदभिक्षु जी का प्रशंसनीय जीवन	मनमोहन कुमार आर्य	14
हनुमान और सीता का संवाद	ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी	18
राजा महेन्द्र प्रताप	स्वामी यतीश्वरानन्द जी	21
स्वास्थ्य रक्षक घरेलू नुस्खे	वैद्य डॉ० प्रेम दत्त पाण्डेय जी	24
आयुर्वेदिक चिकित्सा	डॉ० भगवान दाश	26
तुलसी द्वारा कुछ घरेलू उपचार	श्री कमल जी साबू	28
मधुमेह के पाँच अनुभूत प्रयोग	श्री मनोहर लाल अग्रवाल	29
दमा–एक घातक रोग	योगाचार्य डॉ० विनोद कुमार शर्मा	31

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1. वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष) — रु. 200/– वार्षिक
2. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य — रु. 2000/–

नोटः पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

धैर्य का गुण

धीरता, सहिष्णुता, स्थिरता का भाव और सहनशीलता धृति या धैर्य है। विषम परिस्थितियां उत्पन्न हो जाने पर भी मन में चिन्ता, शोक और उदासी उत्पन्न न होने देने का गुण धैर्य है। धैर्य मनुष्य को ऊँचा उठाने का एक उत्तम गुण है। धैर्यवान व्यक्ति विपत्ति आने पर भी अपना मानसिक सन्तुलन बनाए रखता है और शान्तचित्त से इस पर नियंत्रण करते हुए बचने का सरल मार्ग खोज लेता है। सुख दुःख, जय पराजय, हानि लाभ, गर्मी सर्दी आदि अनेक ऐसे द्वन्द्व हैं जो जीवन में अनुकूलता या प्रतिकूलता का अनुभव कराते रहते हैं। द्वन्द्वों पर विजय पाने के लिए किया गया पुरुषार्थ एक प्रकार का तप है। इन द्वन्द्वों पर विजय पाने के बाद व्यक्ति धीर पुरुष बन जाता है। इस गुण के कारण वह सुख के समय प्रसन्नता से गदगद नहीं होता और न दुःख में हताश होकर बैठता है बल्कि हर एक अवस्था में समान रूप से कार्यशील बना रहता है। धैर्य के गुण को प्राप्त करके मनुष्य में असाधारण सामर्थ्य आ जाती है। वह न केवल अपने लक्ष्यों को अविचल रूप से प्राप्त करता जाता है, बल्कि दूसरों को उचित सलाह देने के लिए भी सदा तत्पर रहता है। गीता में मनुष्य के इस गुण को दैवीय सम्पदा बताया गया है। इस गुण के अभाव में मनुष्य धार्मिक कार्य में लज्जा करेगा और अधार्मिक कामों या कुकर्मों को करने में नहीं डरेगा। ऐसे में समाज में आसुरी वृत्ति बढ़ती जायेगी। समाज में मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए हमें धैर्यशाली बनना चाहिए। मनुष्य को जीवन मार्ग पर चलते हुए अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं और अनेक संघर्ष करने पड़ते हैं, परन्तु इनका सामना धीरज रख कर ही किया जा सकता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन में अनेक कठिनाइयां आने पर भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी और विषम परिस्थितियों का धैर्य के साथ सामना किया। इसी प्रकार अन्य अनेक महापुरुषों के जीवन में भी जटिल परिस्थितियों के आने पर उनके द्वारा विपत्तियों का सामना धैर्य के साथ किया जाता रहा है। सामान्य परिस्थितियों में तो जीवन यथावत चलता रहता है परन्तु धैर्य की परीक्षा विपत्ति आने पर ही होती है, इसीलिए संत तुलसीदास ने उचित ही कहा है, ''धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी, आपतकाल परखिए चारी।'' मनुष्य को सदा प्रत्येक परिस्थिति में अपने को नियंत्रित रखते हुए धैर्य बनाए रखना चाहिए। ऐसे व्यक्ति कभी भी जीवन के अपने सुदृढ़. मार्ग से भटकते नहीं हैं। वे सदैव अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रहते हैं और उनका जीवन अपने आदर्शों को पाने में समर्थ रहता है। भर्तृहरि का कहना है कि चाहे नीति निपुण व्यक्ति हमारी निन्दा करें और चाहे स्तुति करें, लक्ष्मी अर्थात धन सम्पत्ति चाहे रहे न रहे, आज ही मरना हो चाहे एक युग के पश्चात मरना हो, धीर पुरुष न्याय के रास्ते से विचलित नहीं होते हैं। आर्यसमाज के महाधन स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे ही एक धीर पुरुष थे, जिनके द्वारा अपने उद्देश्य को पाने के लिए पुरुषार्थ और धैर्य को जीवन का अंग बनाया गया था। यह अंक स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक के रूप में सुधी पाठकों की सेवा में समर्पित है।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

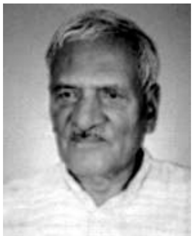

वेदामृत

ओ३म्

'बड़े–छोटे सबको नमन'

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान् यदि शक्नवाम, मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः।।

ऋग्वेद 1.27.13

ऋषिः आजीगर्तिः शुनःशेपः। देवता विश्वेदेवाः। छन्दः त्रिष्टुप।

(महद्भ्यः नमः) ज्ञान और गुणों में महानों को नमः **(अर्भकेभ्यः नमः)** छोटों को नमः, **(युवभ्यः नमः)** युवकों को नमः, **(आशिनेभ्यः नमः)** वयोवृद्धों को नमः। (यदि शक्नवाम) जहां तक हम समर्थ हों (देवान्) विद्वानों को (यजाम) सत्कृत करें। **(देवाः)** हे विद्वानों! **(ज्यायसः)** अपने से बड़े के (शंसं) स्तवन को मैं **(मा आवृक्षिः)** न छोंड़ू।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे अन्यों के प्रति अभिवादन आदि उचित शिष्टाचार का पालन करना होता है। मैं भी बड़े–छोटे सबको अभिवादन करता हूं, कृत्रिम और दिखावटी नहीं, किन्तु अन्तर्मन से। 'नमः' का मूल अर्थ है झुकना। झुकना सिर से भी होता है, मन से भी। राजा, राज्याधिकारी, माता, पिता, गुरु, अतिथि, साधु, संन्यासी, शिशु, कुमार, विद्यार्थी, युवक, वृद्ध, स्वामी, सेवक प्रत्येक से मिलने पर हृदय में जो आदर, श्रद्धा, प्रेम, आशीर्वाद आदि के भाव उत्पन्न होते हैं, वे सब 'नमः' के अन्दर समाविष्ट हैं। अतः अभिवादन के लिए वैदिक 'नमस्ते' शब्द अत्यन्त हृदयग्राही और उपयुक्त है। जब छोटा बड़े को 'नमस्ते' करता है, तब वह बड़े के प्रति अपने हृदय के सम्मान और अपनी श्रद्धा को प्रकट करता है। प्रत्युत्तर में बड़े द्वारा छोटे को 'नमस्ते' कहने में उसके अन्तस्तल में निहित प्रेम और आशीर्वाद उमड़कर प्रवाहित हो रहा होता है। समान द्वारा समान को 'नमस्ते' कहने में पारस्परिक सौहार्द और एक–दूसरे की उन्नति की कामना व्यक्त होती है। साथ ही 'नमः' में केवल शुभकामना ही नहीं, प्रत्युत बड़े–छोटे सबके प्रति कर्तव्य–पालन का भाव भी निहित है।

हे राष्ट्र के विद्यावृद्ध और गुणवृद्ध महान् नर–नारियो! हे उपदेशामृत–वर्षा से जनता को तृप्त करनेवाले वीतराग संन्यासियो! हे विद्वच्छिरोमणि तपोनिष्ठ वानप्रस्थ आचार्यो! हे देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने को उद्यत महावीरो! हे जनता–जनार्दन की सेवा में तत्पर महापुरुषो! 'तुम्हें नमः'! हे निश्छल भावभंगियों और बाल–क्रीड़ाओं से मन को मुदित करनेवाले अबोध शिशुओं! हे अल्पव्यस्क कुमारो! हे गुरु के अधीन विद्याध्ययन में रत तपस्वी, व्रती ब्रह्मचारियों! तुम्हें 'नमः'। हे अपने संकल्प–बल से भूमि आकाश को झुका देनेवाले बली, साहसी, ओजस्वी, विजयी युवको! तुम्हें 'नमः'। हे परिपक्व, धीर, गम्भीर, अनुभवी, धन्य, वन्दनीय, वयोवृद्ध जनो! तुम्हें 'नमः'।

समस्त बालक, युवक, वृद्ध मेरे अर्चनीय देव हैं। जहां तक सम्भव होगा, मैं इन्हें स्नेह–सत्कार दूंगा, इनकी सेवा करूंगा। यह भी ध्यान रखूंगा कि जो मुझसे बड़े हैं, उनकी शंसना में, उनके उपकार के प्रति कृतज्ञता–ज्ञापन में मुझसे कोई त्रुटि न हो।

(सामवेद के संस्कृत–हिन्दी भाष्यकार एवं अनेक वैदिक ग्रन्थों के लेखक आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकृत की पुस्तक वेद–मंजरी से साभार)

स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना

—डॉ० कृष्णकांत वैदिक शास्त्री

महर्षि दयानन्द के द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति और पठन—पाठन विधि को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज द्वारा विभिन्न शिक्षण संस्थाएं स्थापित की गयीं थीं। प्रारम्भ में इन्हें पाठशाला नाम दिया गया था, जिनके लिए बाद में 'गुरुकुल' नाम का प्रयोग किया गया था। वर्तमान समय में सम्पूर्ण भारत में दो सौ से अधिक गुरुकुल स्थापित हैं जिनमें महर्षि के शिक्षणविषयक मन्तव्यों को क्रियान्वित करने का प्रयास किया जा रहा है और आंशिक रूप से यह प्रयास सफल भी रहा है। गुरुकुल कांगड़ी आदि गुरुकुल शहर के कोलाहल से बहुत दूर एकान्त प्रदेश में खोले गए थे। प्रारम्भ में गुरुकुलों की अपनी पाठविधि थी, वे अपनी परीक्षाएं स्वतन्त्र रूप से लेते थे और अपनी ही उपाधियां प्रदान करते थे। आधुनिक समय में बिना औपचारिक उपाधि के युवक—युवतियों के द्वारा नौकरियां मिलना सम्भव नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में यह विचार किया गया कि सरकारी उपाधियां प्राप्त करवानी चाहिएं और सरकारी परीक्षाओं में बैठ कर नौकरियों को भी प्राप्त करना चाहिए। ऐसे गुरुकुल भी हो सकते हैं जिनकी पाठविधि सरकारी शिक्षण संस्थाओं के समान हो और विद्यार्थियों के लिए छात्रावास आदि ब्रह्मचर्यपूर्वक अनुशासित जीवन बिताने की पूरी सुविधा हो। स्वराज्य के पश्चात् यह विचार बल पकड़ने लगा और सूना, सोनगढ़, डोरली आदि अनेक गुरुकुलों ने सरकारी पाठविधि लागू करना प्रारम्भ कर दिया। समय की आवश्यकता और स्नातकों की आजीविका की समस्या को देखते हुए कई गुरुकुलों ने अपने पाठ्यक्रम में परिवर्तन भी कर लिया। कुछ गुरुकुल ऐसे भी हैं जिन्होंने आर्षपाठ विधि दृढ़ रखते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित पाठविधि का अनुसरण करते रहना ही श्रेयस्कर समझा है। ऐसे गुरुकुलों में पाणिनि महाविद्यालय रेवली प्रमुख है। यह देखने में आया है कि हमारे गुरुकुलों में व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषद्, सूत्रग्रन्थ आदि का ज्ञान दिया जाता है और कई गुरुकुलों में विभिन्न विश्वविद्यालयों की शास्त्री परीक्षा के लिए अनिवार्य विषयों, जैसे हिन्दी, अंग्रेजी, पर्यावरण—विज्ञान आदि का भी ज्ञान दिया जाता है। आज हम तकनीकी युग में रह रहे हैं, जहां अधिक बल तकनीकी विषयों पर होने के कारण रोजगार के अवसर भी इन्हीं विषयों से सम्बन्धित मिलते हैं। गुरुकुल से शिक्षा लिए छात्रों के पास यदि किसी विश्वविद्यालय की डिग्री होती है तो केवल संस्कृत अध्यापक का कार्य मिल सकता है और उसके लिए भी बी0 एड0 करना अनिवार्य होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि ऐसे समस्त गुरुकुलों जहां शास्त्री आदि की उपाधि के लिए पढ़ाया जाता है, में बी0एड0 की पढाई भी अनिवार्य रूप से करायी जानी चाहिए। गुरुकुल से निकलने के तुरन्त बाद ही छात्रों को रोजगार मिल जाये, तभी लोग अपने तेजस्वी बालकों को गुरुकुलों में पढ़ने हेतु भेजेंगे अन्यथा आज तो यह भी देखने में आ रहा है कि कुछ अभिभावक अपने नटखट बच्चों को सुधारने के लिए गुरुकुलों में भेजते हैं जिससे वे सुधर सकें। आज के युग में न तो कोई विष्णु शर्मा जैसा आचार्य है और न

परिस्थितियां ही अनुकूल हैं। हम इन विषयों पर सेमिनार, वर्कशाप आदि कर के उचित हल की तलाश कर सकते हैं।

अब हम स्वामी श्रद्धानन्द के द्वारा गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के सम्बन्ध में किए गये प्रयासों का विस्तार से वर्णन करेंगे। लाला मुंशीराम और उनके सहयोगियों के द्वारा प्राचीन गुरुकुल शिक्षाप्रणाली को पुनर्जीवित करने हेतु सन् 1896 में ही आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया गया था। वे अपने पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' में लेखों के माध्यम से समय–समय पर अपने विचारों से अवगत कराते रहते थे। 'आर्य पत्रिका' और अन्य आर्यपत्रों ने भी इस योजना का भरपूर समर्थन किया। इन प्रयासों के फलस्वरूप गुरुकुल की स्थापना के विचार ने मूर्तरूप धारण करना आरम्भ कर दिया था। लाला मुंशीराम जी की अपील पर एतद्विषयक प्रस्ताव आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। सभा ने अपने 26 नवम्बर 1898 के अधिवेशन में इस प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान कर दी और उसकी योजना को तैयार करने का कार्य मुंशीराम जी को सौंप दिया था। लाला जी ने इसके लिए योजना तैयार कर दी, परन्तु गुरुकुल खोलने के लिए धन की आवश्यकता थी। धन एकत्रित करने का कार्य भी उन्होंने अपने द्वारा ही करना स्वीकार कर लिया और अगस्त 1898 के सद्धर्म प्रचारक में उन्होंने यह घोषणा की कि जब तक वे गुरुकुल के लिए 30 हजार रुपया एकत्रित नहीं कर लेंगे तब तक अपने घर में पैर नहीं रखेंगे। इस उद्देश्य से वे 26 अगस्त, 1899 को धन एकत्रित करने के लिए निकल पड़े। उन दिनों यह एक बड़ी धनराषि थी जिसको एकत्र करना अत्यन्त कठिन कार्य था। लाला मुंशीराम जी ने 8 अप्रैल, 1900 तक लगभग 40 हजार एकत्र कर लिया था। उसके उपरान्त ही वह अपने घर आए थे। इसके बाद यह विचार किया गया कि गुरुकुल किस स्थान पर खोला जाए। श्रीगोविन्दपुर के विशनदास ने 1000 रुपया देने का प्रस्ताव रखा। श्री मोहनलाल ने अपने अपने गाँव में भूमि और 50 रुपया वार्षिक देने का वचन दिया। लूनमियानी के लाला ज्वालासहाय ने अपनी कुछ भूमि दी। लाला मुंशीराम जी के विचार से ये स्थान गुरुकुल के लिए उपयुक्त नहीं थे। वे कोई ऐसा स्थान चाहते थे जहाँ नदियों का संगम हो और वहाँ पर्वत की उपत्यकायें हों। ऐसा स्थान न मिलने पर गुजरांवाला में गुरुकुल स्थापित करने का विचार किया गया। इस स्थान पर एक वैदिक पाठशाला पहले से ही विद्यमान थी। इसी में 19 मई, 1900 को गुरुकुल की स्थापना कर दी गई। महात्मा लाला मुंशीराम जी ने अपने दोनों पुत्र हरिश्चन्द्र और इन्द्रचन्द्र को इस गुरुकुल में प्रवेश दे दिया। इनके अतिरिक्त अन्य 18 और छात्र, इस प्रकार कुल 20 विद्यार्थी गुरुकुल में प्रविष्ट हुए। वैदिक पाठशाला में पं0 गंगादत्त संस्कृत के अध्यापक थे। उन्हें ही गुरुकुल का मुख्याध्यापक नियुक्त कर दिया गया था। दो वर्ष तक गुरुकुल गुजरांवाला में ही रहा। लाला मुंशीराम जी गुरुकुल की स्थापना किसी गंगातट पर करना चाहते थे और उपयुक्त स्थान की तलाश में थे। हरिद्वार के सामने गंगा के पूर्वी तट पर स्थित कांगड़ी गाँव के एक जमींदार मुंशी अमनसिंह जी, जो एक बड़े त्यागी और धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे, ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को सूचित किया कि वे अपनी कुल सम्पत्ति कांगड़ी गाँव (लगभग 1400 बीघे भूमि सहित) सभा को दान में देना चाहते थे। 22 अक्टूबर, 1901 को सभा ने इस

दान को स्वीकार कर लिया और 21–24 मार्च, 1902 को कांगड़ी गाँव में गुरुकुल का उद्घाटन करने का निश्चय किया गया। इसके बाद लाला मुंशीराम भवन आदि बनवाने और अन्य व्यवस्थायें करने हेतु कनखल पहुंच गए और कांगड़ी गाँव में गुरुकुल बनाने के लिए दुर्गम जंगल को साफ करके झोपड़ियां बनवा लीं। 2 मार्च, 1902 को गुजरांवाला से ब्रह्मचारियों और अध्यापकों के पहुँचने के बाद कांगड़ी गाँव में गुरुकुल की स्थापना कर दी गई। औपचारिक उद्घाटन उत्सव पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 21–24 मार्च को होली की छुट्टियों के अवसर पर मनाया गया। इस अवसर पर लगभग 500 नर–नारी बिना किसी निमंत्रण के वहाँ पहुँच गए थे।

गुजरांवाला से लगभग 15 ब्रह्मचारी गुरुकुल आए थे, परन्तु उत्सव के बाद जब वेदारम्भ संस्कार हुआ तो ब्रह्मचारियों की संख्या बढ़कर 45 हो गई थी। इसके बाद ब्रह्मचारियों की संख्या निरन्तर बढ़ती गई और पाँचवें वर्ष में यह संख्या बढ़कर 187 हो गई थी। इसके बाद तो आर्य जनता का गुरुकुल के प्रति आकर्षण तेजी से बढ़ता जा रहा था, जिसके फलस्वरूप प्रतिवर्ष सैकड़ों प्रार्थना पत्र प्रवेश हेतु आने लगे। अब स्थिति यह हो गई कि सन् 1910 में 130 के लगभग छात्र प्रवेश के लिए आए थे, जिनमें केवल 25 को ही प्रविष्ट किया जा सका था। प्रबन्धन की दृष्टि से भी गुरुकुल में निरन्तर उन्नति हुई और धीरे–धीरे झोपड़ियां का स्थान ईंट की इमारतों ने ले लिया। चार वर्ष के अन्दर 25000 रुपये की लागत से 22 पढ़ने के कमरे और ब्रह्मचारियों के निवास के लिए पृथक् आश्रम बना लिया गया था। सन् 1908 में कालेज की पक्की इमारत बननी आरम्भ हो गई थी, परन्तु ब्रह्मचारियों के निवास के लिए आश्रम और अन्य अनेक भवन पर्याप्त समय तक कच्चे ही रहे। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल के लिए जो प्रथम नियमावली स्वीकृत की थी, उसमें इस बात का उल्लेख था कि इस संस्था में संस्कृत, वेद–वेदांग और शास्त्रों की शिक्षा के साथ–साथ अंग्रेजी भाषा और आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के अध्यापन की भी व्यवस्था की जाएगी। इसके क्रियान्वयन में आरम्भ में कठिनाई आयी। मास्टर रामदेव जी प्रशिक्षित ग्रेजुएट थे। वे विज्ञान पढ़ाने के अतिरिक्त शिक्षा सम्बन्धी नियंत्रण के पक्षपाती थे। उनके विचार से गुरुकुल को एक पुराने ढंग की पाठशाला बनाना उचित नहीं था। परन्तु आचार्य गंगादत्त इस विचार के प्रबल विरोधी थे। वे मास्टर रामदेवजी से संघर्ष करते रहे और सफलता न मिलने पर उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद महात्मा मुंशीराम ही गुरुकुल के आचार्य नियुक्त हुए। शिक्षा विषयक प्रबन्धन में उनके सहायक मास्टर रामदेव नियुक्त किए गए थे। गणित, भौतिकी और रसायन आदि विषय मास्टर गोवर्धन और श्री विनायक गणेश साठे पढ़ाते थे। सन् 1907 में गुरुकुल में महाविद्यालय विभाग भी आरम्भ कर दिया गया था। महात्मा मुंशीराम जी के संरक्षण में गुरुकुल निरन्तर प्रगति करता गया। सन् 1917 में महात्मा जी ने संन्यास आश्रम में प्रवेश करने का निर्णय लिया। उस समय गुरुकुल में कुल 340 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे। यह महात्मा मुंशीराम का ही परिश्रम और अथक प्रयास था कि गुरुकुल वर्तमान स्थिति तक प्रगति कर सका है। उनके इस अप्रतिम योगदान के लिए शिक्षा और आर्यजगत् में उन्हें सदैव स्मरण रखा जाएगा।

'ईश्वर, वेद और ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द'

(23 दिसम्बर 2019 को 93वें बलिदान दिवस पर)

—मनमोहन कुमार आर्य

आर्यसमाज के इतिहास में ऋषि दयानन्द के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी का प्रमुख स्थान है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बरेली में ऋषि दयानन्द जी के दर्शन किये थे और और उनके उद्देश्यों व कार्यों को यथार्थ रूप में जाना व समझा था। उन्होंने मन वचन व कर्म से उनके कार्यों को पूरा करने के लिये यथासम्भव कार्य किया। उनके जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो हमें उनका एक महत्तम कार्य प्राचीन वैदिक शिक्षा पद्धति की देन गुरुकुल पद्धति को पुनर्जीवित कर उसकी हरिद्वार के कांगड़ी ग्राम में स्थापना करना था। यह कार्य कितना कठिन व जटिल था, इसका अनुमान भी हम नहीं लगा सकते। प्रथम कार्य तो गुरुकुल के लिये वृहद भूभाग की व्यवस्था सहित वहां भवनों के निर्माण के लिये धन संग्रह करना था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस कार्य को जिस उत्साह, श्रद्धा तथा त्यागपूर्वक किया वह प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायक है। इतिहास में इस प्रकार के उदाहरण मिलना कठिन है। गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार की स्थापना सन् 1902 में की गई। बहुत तीव्रता से गुरुकुल ने प्रगति की और यह देश का शिक्षा का एक आदर्श राष्ट्रीय संस्थान बना। इसकी कीर्ति व यश का अनुमान हम इसी बात से लगा सकते हैं कि इसकी सुगन्ध को इग्लैण्ड में बैठे लोगों ने भी अनुभव किया था और वहां ब्रिटिश राजनेता जेम्स रैमसे मैकडोनाल्ड (1866—1937) के नेतृत्व में कुछ प्रतिनिधि गुरुकुल कांगड़ी को देखने हरिद्वार पधारे थे। श्री रैमसे मैकडोनाल्ड बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने थे। अपनी गुरुकुल की यात्रा में उन्हें लिखा था कि यदि किसी को जीवित ईसा मसीह के दर्शन करने हों तो उसे

स्वामी श्रद्धानन्द जी के दर्शन करने चाहिये। न केवल रैमसे मैकडोनाल्ड अपितु उन दिनों के वायसराय चेल्म्सफोर्ड भी गुरुकुल कांगड़ी में आये थे। उन्होंने गुरुकुल को देखा था और जाते हुए गुरुकुल को सरकारी आर्थिक सहायता का प्रस्ताव किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अनेक कारणों से वायसराय जी की ओर से गुरुकुल को प्रस्तावित आर्थिक सहायता को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया था। इस घटना से यह अनुमान लगता है कि उन दिनों के हमारे पूर्वज तप, त्याग, पुरुषार्थ में विश्वास रखते थे और सुविधाभोगी नहीं थे अन्यथा आज हम इस प्रकार के प्रस्ताव को ठुकराने की कल्पना भी नहीं कर सकते। बाद के गुरुकुल के अधिकारियों ने सरकार से मान्यता एवं आर्थिक सहायता प्राप्त कीं। आज का गुरुकुल स्वामी श्रद्धानन्द और आचार्य

रामदेव के स्वप्नों का गुरुकुल नहीं है। गुरुकुल का उद्देश्य वेद, वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा करने के साथ वेद का देश– देशान्तर में प्रचार करना है। आज यह उद्देश्य किस सीमा तक पूरा हो रहा है, सभी आर्यजन इससे भली भांति परिचित हैं। अतीत में गुरुकुल ने हमें अनेक वैदिक विद्वान, वेद भाष्यकार, पत्रकार, शिक्षा शास्त्री, देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी, समाज सुधारक, शिक्षक, राजनेता, व्यवसायी आदि दिये हैं। देश की स्वतन्त्रता के बाद हम प्रायः सभी क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों का ह्रास देखते हैं। यही स्थिति आर्यसमाज और स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रिय गुरुकुल की भी हुई है। आज स्थिति यह है कि आर्यसमाज व देश में स्वामी श्रद्धानन्द जी के समान योग्य, त्यागी, तपस्वी व समर्पित विद्वान नेता नहीं है जिसके लिये ईश्वर, वेद और आर्यसमाज से बढ़कर कुछ न हो तथा वह वेद और ऋषि दयानन्द के उद्देश्यानुसार **'कृण्वन्तो विश्मार्यम्'** के उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वात्मा उच्च योग्यता को धारण किये होकर संघर्षरत हो।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वेद और आर्यसमाज की आध्यात्मिक एवं समाज सुधार की विचारधारा का सर्वाधिक प्रचार किया। वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान भी रहे। यह सभा आर्यसमाज की सबसे अधिक प्रभावशाली एवं गतिशील संस्था थी। आपने समाज सुधार के सभी कार्यों को पूरी लगन एवं संगठित रूप से किया। अपने जीवन काल में अनेक गुरुकुलों को स्थापित किया। ब्रह्मचारियों को वेदाध्ययन एवं वेदप्रचार की प्रेरणा की। आपका अपना जीवन भी वेद प्रचार का जीवन्त उदाहरण था जिससे लोग प्रेरणा लेते थे। आप समाज में दलित समस्या से पूर्णतः परिचित थे। जन्मना–जातिवाद की बीमारी के दुष्प्रभावों से भी आप परिचित थे। आपने जन्मना जातिवाद, भेदभाव व छुआछूत के उन्मूलन के लिये भी कार्य किया। डा0 अम्बेडकर भी स्वामी जी के जाति सुधार एवं दलितोद्धार के कार्यों के प्रशंसक थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। आपने **''सद्धर्म प्रचारक''** नामक उर्दू पत्र का प्रकाशन किया था। बाद में राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिन्दी की महत्ता से परिचित होने पर आपने घाटा उठाकर भी इसे हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था। एक प्रकार से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पंजाब के उर्दू भाषी हिन्दुओं को देश की एकता का आधार हिन्दी भाषा पढ़ाई थी। आपका प्रेस लाखों रुपये मूल्य का था जिसे आपने आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब को दान कर दिया था। आप देश के प्रेरणादायक सर्वस्व दानी धर्मप्रचारक व सामाजिक नेता थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी जिन दिनों जालंधर में वकालत करते थे, उन दिनों आपकी वकालत खूब चलती थी। आर्यसमाज से प्रेम व धर्म प्रचार के कार्यों की आवश्यकता का विचार कर आपने अपनी वकालत की कमाई पर लात मारकर वेद प्रचार के कार्य को अपनाया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जिस त्याग भावना का परिचय दिया, ऐसे लोग कम ही हुए हैं। आपकी जालन्धर में एक बड़ी कोठी थी। इस पर आपके बच्चों का उत्तराधिकार था। आपके दो पुत्र हरिश व इन्द्र तथा तीन पुत्रियां थी। इस सम्पत्ति के मोह पर भी आपने विजय पाई थी और अपने पुत्रों को सहमत कर अपनी जालन्धर की इस कोठी को भी गुरुकुल कांगड़ी को दान

देकर **'सर्वमेघ यज्ञ'** किया था। ऐसे महान चरित्र के धनी पूर्वजों के होते हुए हम आर्यसमाज में जब पदों के लिये लोगों को गुटबाजी व अधर्माचरण करते हुए देखते हैं तो हमें दुःख होता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इन कार्यो को करते हुए **''शुद्धि''** का कार्य भी किया। शुद्धि का अर्थ है कि अपने जो धर्म—बन्धु भय, प्रलोभन, छल व अज्ञान से विधर्मियों द्वारा बलात् विधर्मी बना लिये गये होते हैं, उन्हें वैदिक धर्म की श्रेष्ठता व ज्येष्ठता समझाकर पुनः अपने पूर्वजों के धर्म में प्रविष्ट कराना। यह कार्य विधर्मियों के अतीत के अनैतिक कार्यों का निवारण होता है। ऋषि दयानन्द ने वेद की **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** आदेश के अनुसार इसकी प्रेरणा की थी। यदि शुद्धि का कार्य न किया जाये तो हमारे विभिन्न मतों के बन्धु सत्य मत व सद्धर्म से परिचित न होने के कारण अभ्युदय एवं निःश्रेयस को प्राप्त करने सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष एवं अपनी कामनाओं को सिद्ध नहीं कर सकते। आर्यसमाज ही विश्व का ऐसा एकमात्र संगठन है जो विश्व को सच्चे ईश्वर व आत्मा का स्वरूप बताने के साथ ईश्वर की सच्ची उपासना करना सिखाता है जिससे मनुष्य ईश्वर का प्रत्यक्ष वा साक्षात्कार कर अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ईश्वर, वेद और ऋषि की भावनाओं को समझकर इनका प्रचार किया था और इसमें अपूर्व सफलता प्राप्त की थी। यदि यह कार्य स्वामी श्रद्धानन्द की भावनाओं के अनुरूप जारी रखा जाता तो शायद पाकिस्तान का निर्माण न होता और हमारा भारत खण्डित न होकर अखण्ड भारत बना रहता।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भी सराहनीय योगदान है। गांधी जी उन्हें अपना बड़ा भाई मानते थे। शायद यह कथन मात्र रहा हो। बाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी को देश व समाज के व्यापक हित में कांग्रेस से त्याग पत्र देना पड़ा था। जिन दिनों अंग्रेजों द्वारा रालेट एक्ट को लागू किया जा रहा था, देश भर में विरोध हो रहा था। उन दिनों दिल्ली में रालेट एक्ट के विरोध में आन्दोलन का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी के मजबूत हाथों में था। रालेट एक्ट के विरोध में दिल्ली मे एक दिन पूर्ण हड़ताल की गई। सारा बाजार व व्यवसायिक प्रतिष्ठान बन्द थे। दिल्ली में एक जलूस निकाला गया था जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया। यह जलूस चांदनी चौक में लाल किले की ओर बढ़ रहा था। तभी अंग्रेजों के गुरखा सैनिक सामने आये और स्वामी श्रद्धानन्द जी को आगे बढ़ने से रोक दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी भीड़ चीर कर सैनिको के सामने आये तो सैनिकों ने अपनी बन्दूकों की संगीने स्वामी श्रद्धानन्द जी छाती पर तान दी। निर्भीक स्वामी जी ने अपनी छाती खोली और दहाड़ लगा कर उन सैनिको को कहा था **''हिम्मत है तो मेरी छाती पर गोली चलाओ।''** तभी वहां एक अंग्रेज पुलिस अधिकारी घोड़े पर पहुंचा। उसने सैनिको को बन्दूकें नीचे कर लेने को कहा। इससे एक बहुत बड़ी दुर्घटना होते होते टल गई।

इस घटना ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को दिल्ली का बेताज बादशाह बना दिया था। उनके इस शौर्य और देश पर बलिदान होने की साहसिक भावना से प्रभावित होकर जामा मस्जिद के इमाम ने उन्हें मुस्लिम धार्मिक लोगों

को सम्बोधित करने के लिये आमंत्रित किया था। स्वामीजी जामा मस्जिद पहुंचे थे और उसके मिम्बर से उन्होंने वेदमन्त्र **'ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभुविथ। अघा ते सुम्नीमहे।।'** का पाठ करते हुए मुस्लिम बन्धुओं को सम्बोधित किया था। इस अवसर पर उन्होंने कहा था कि हम शब्द में 'ह' और 'म' दो अक्षर हैं। ह का अर्थ हिन्दू और म का अर्थ मुसलमान है। सभी ने उनकी इस ऊहापूर्ण बात को पसन्द किया था। स्वामी जी पहले व अन्तिम गैर मुस्लिम व्यक्ति थे जिन्हें जामा मस्जिद के मिम्बर से मुसलमानों को धार्मिक उपदेश देने का अवसर मिला। स्वामी जी ने देश की स्वतन्त्रता के लिये अनेक प्रकार से योगदान किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान भी रहे। उन्हीं के कार्यकाल में सन् 1925 में मथुरा में ऋषि दयानन्द के जन्म की अर्ध शताब्दी मनाई गई थी। इस कार्यक्रम में लाखों लोग आये थे। व्यवस्था की दृष्टि से यह आयोजन अति सफल रहा था। इस अवसर पर प्रमुख आर्य प्रकाशक श्री गोविन्द राम जी ने सत्यार्थप्रकाश का एक सस्ता संस्करण प्रकाशित किया था। यह अर्ध–शताब्दी समारोह महात्मा नारायण स्वामी जी के नेतृत्व में आयोजित किया गया था। इसके बाद शायद ऐसा कार्यक्रम आर्यसमाज के इतिहास में नहीं हुआ। आज आर्यसमाज में स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा नारायण स्वामी जैसा कोई नेता नहीं है। आर्यों में वह भावनायें भी नहीं हैं जो उन दिनों के आर्यों में देखने को मिलती थी।

दिनांक 23 दिसम्बर, 1926 को रूग्ण अवस्था में एक मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद ने स्वामी जी के दिल्ली स्थिति निवास पर पहुंच कर धोखे से उन्हें कई गोलियां मारकर शहीद कर दिया। मनुष्य मर सकता है परन्तु सत्य नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी आज भी हमारे दिल में जीवित हैं। आर्यसमाज को स्वामी श्रद्धानन्द जी का अनुकरण करना चाहिये। इस अवसर पर हम स्वामी जी को नमन और श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान्

1. श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली	9868536762	12. डॉ० वीरपाल वेदालंकार, गाजियाबाद	9811294382
2. श्री महावीर मुमुक्षु, मुरादाबाद	9837372207	13. डॉ० महावीर मीमांसक, दिल्ली	9811960640
3. डॉ० सोमदेव शास्त्री, मुम्बई	9869162041	14. रामचन्द्र शर्मा, बिजनौर	9412568601
4. आचार्य भगवान देव, दिल्ली	9250906201	15. डॉ० लक्ष्मण कुमार शास्त्री, दिल्ली	9891706264
5. आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, दिल्ली	9810084806	16. श्री महेन्द्रपाल आर्य, दिल्ली	9810787056
6. श्री विष्णुमित्र वेदार्थी, नजीबाबाद	9412117965	17. डॉ० सारस्वत मोहन, दिल्ली	9810835335
7. श्री विष्णुदत्त आर्य, गुरुग्राम	9873391975	18. आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, होशंगाबाद	9424471288
8. डॉ० विनय विद्यालंकार, रामनगर	9412042430	19. आचार्य दर्शनीय लोकेश, नौएडा	9412354036
9. डॉ० महेश कुमार विद्यालंकार, दिल्ली	9810305288	20. श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, शामली	9411814167
10. पं० वीरेन्द्र शास्त्री, सहारनपुर	9719436141	21. श्री ओमप्रकाश, आबू रोड(राज.)	9414589510
11. श्री सतेन्द्र सिंह आर्य, मेरठ	9897000375	22. सोमपाल शास्त्री, दिल्ली	9313635846

वेद ईश्वर प्रदत्त स्वतः प्रमाण धर्मग्रन्थ हैं

–मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर और धर्म दो महत्वपूर्ण शब्द हैं। ईश्वर उस सत्ता का नाम है जिसने इस संसार को बनाया है और जो इसका संचालन कर रही है। धर्म उस सत्य और तर्कपूर्ण आचार संहिता का नाम है जिसका आचरण मनुष्य को करना होता है और जिसको करने से मनुष्य का जीवन दुःखों से रहित तथा सुखों से पूरित होता है। मत–मतान्तर व उनके ग्रन्थों को धर्म ग्रन्थ इस लिये नहीं कह सकते क्योंकि उन सबमें अविद्या पायी जाती है। अविद्या मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु है। अविद्या मनुष्य के ज्ञान व सुख प्राप्ति में सबसे अधिक बाधक होने सहित सभी दुःखों का कारण होती है। यही कारण था कि हमारे ऋषि मुनि समाज को अविद्या से दूर करने के लिये सतत चिन्तन–मनन करते थे और सभी लोगों को वेदों के सत्य व ज्ञान से पूर्ण मार्ग पर चलने की प्रेरणा करते थे। सृष्टि के आरम्भ में प्रचलित ऋषियों की परम्परा में ही ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ था। उन्होंने संसार में कोई नया मत तथा सम्प्रदाय नहीं चलाया अपितु प्राचीन ऋषियों की मान्यताओं व सत्य सिद्धान्तों के प्रचारार्थ आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज की स्थापना इसलिये की गई थी कि वह असत्य व अविद्या से समाज को परिचित कराये और उसे दूर करने के उपाय करे। इसके लिए असत्य का खण्डन करना भी आवश्यक था जोकि आर्यसमाज ने किया। खण्डन का उद्देश्य जन–कल्याण ही होता है। खण्डन असत्य का ही किया जाता है सत्य का नहीं। यदि कोई मनुष्य व विद्वान सत्य को स्वीकार न करे तथा उसका खण्डन करे तो यह मनुष्यता से बाहर की बातें हैं। कुतर्क करना बुरा स्वभाव होता है परन्तु सत्य को स्थापित करने के लिये तर्क वा खण्डन करना प्रशंसनीय एवं हितकर होता है। ऋषि दयानन्द ने मनुष्य जीवन को सुखद एवं उन्नति से पूर्ण करने के लिये ही असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन किया और इसके अच्छे परिणाम भी सामने आये।

ऋषि दयानन्द ने जिन अंधविश्वासों और मिथ्या सामाजिक परम्पराओं का खण्डन किया था उसका समाज पर प्रभाव पड़ा और आज सभी मतों के लोग अन्धविश्वासों एवं मिथ्या परम्पराओं को बुरा मानने लगे हैं परन्तु वह अपने अन्धविश्वासों तथा मिथ्या परम्पराओं को छोड़ने सहित उन पर विचार करने के लिये उद्यत नहीं हैं। उनमें विवेक बुद्धि की कमी भी उन्हें अनेक अन्धविश्वासों एवं अविद्यायुक्त मिथ्या परम्पराओं को छोड़ने में बाधक बनती हैं। हम अनुभव करते हैं कि बिना वेदों का ज्ञान प्राप्त किये और बिना ईश्वर का सच्चा उपासक बने मनुष्य अन्धविश्वासों एवं मिथ्या परम्पराओं के पालन से विमुख नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द जी की यह बहुत बड़ी देन है कि उन्होंने हमें वेदों का ज्ञान दिया। इस कार्य का सम्पादन उन्होंने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों के माध्यम से करने के साथ ऋषि ने चारों वेदों का भाष्य करना भी आरम्भ किया था। यदि कुछ दुष्टों एवं अज्ञानियों ने षड्यन्त्र करके उनकी हत्या न की होती तो वह चारों वेदों का भाष्य पूर्ण कर जाते। ऋषि दयानन्द अपनी मृत्यु दिनांक 30–10–1883 से पूर्व यजुर्वेद का पूर्ण तथा ऋग्वेद का सातवें मण्डल के 52 वें सूक्त तक का भाष्य ही पूर्ण कर सके। उनकी मृत्यु का कारण हत्या का षड्यन्त्र था जिसने मानव जाति को ईश्वर की वाणी वेदों के सम्पूर्ण भाष्य से वंचित

कर दिया। आज स्थिति यह है कि संसार में 7 अरब से अधिक जनसंख्या में, ऋषि दयानन्द के समान एक भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो उनके समान वेदों का ज्ञान व उसके भाष्य करने की योग्यता सहित उपासना में भी सफलता प्राप्त किया हुआ हो। हमारा सौभाग्य है कि ऋषि की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए कुछ विद्वान हुए जिन्होंने ऋषि के सिद्धान्तों को जाना, समझा व अपने जीवन में धारण किया और वह वेदों का अत्यन्त उपयोगी एवं मानव जाति के लिये हितकर व कल्याणप्रद सम्पूर्ण वेदभाष्य करने में सफल हुए। संसार इन सभी भाष्यकारों का ऋणी है परन्तु अपनी अज्ञानता के कारण संसार वेदों से लाभ नहीं उठा रहा है जिससे मानव जीवन अनेक प्रकार के दुःखों से ग्रस्त एवं सुखों से वंचित है। वेद और संसार के सभी मत–मतान्तरों पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि विश्व में यदि शान्ति लाई जा सकती है तो वह केवल वेदों का प्रचार कर अविद्या को दूर करके ही लाई जा सकती है। वैदिक शिक्षाओं का आचरण, उनका धारण करके तथा देश व विश्व के सभी कानून व नियम वेदानुकूल बनाकर ही लाई जा सकती है।

वेद ही मनुष्यों का धर्म क्यों हैं? इसका कारण यह है कि वेद में विश्व के सभी मनुष्यों को एक ही परमात्मा की सन्तान बताया गया है और सभी मनुष्यों को एक परिवार की भांति मानकर सत्य मान्यताओं एवं ज्ञानयुक्त सिद्धान्तों का पालन करने की शिक्षा दी गई है। वेद हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी, पारसी, सिख, बौद्ध व जैन में अन्तर नहीं करता। वह इन सभी को एक ही परमात्मा जो सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अनादि, नित्य, अमर है, उसकी सन्तान बताता है और यही वास्तविकता भी है। संसार में जितने भी मनुष्य हुए हैं वह न तो ईश्वर का अवतार थे, न परमात्मा में ज्ञान, बल, शक्ति, सदाशयता व अन्यान्य गुणों से पूर्ण थे। वह सब अपूर्ण व अधूरे व्यक्तित्व से युक्त अल्पज्ञ एवं ससीम थे। मनुष्य में पूर्णता वेदों के ज्ञान व यौगिक विधि से उपासना करने से ही आती है। इस दृष्टि से हमारे प्राचीन काल के सभी ऋषि और योगी तथा वर्तमान युग में 136 वर्ष पूर्व संसार में विद्यमान महर्षि दयानन्द सरस्वती वैदिक ज्ञान और उपासना से युक्त होने सहित ईश्वर के सर्वाधिक निकट थे। ऐसे विद्वान ऋषियों की शिक्षाओं का पालन करने से ही मनुष्यों का सर्वांगीण विकास वा उन्नति होती है। हम अनुमान से कह सकते हैं कि राम व कृष्ण के समय में किसी मनुष्य के साथ पक्षपात नहीं होता था। अन्याय करने वाले दण्डित किये जाते थे और न्याय व धर्म पर चलने वाले मनुष्यों को शासन से हर प्रकार का सहयोग मिलता था। राम व कृष्ण के समय की न्याय व्यवस्था भी वेद व मनुस्मति आदि ग्रन्थों के अनुसार कठोर व धर्मपालक मनुष्यों के लिये हितकारी थी। यदि ऐसा न होता तो राम बाली और रावण जैसे लोगों को दण्डित न करते, कृष्ण दुर्योधन के अन्याय के विरुद्ध पाण्डवों का साथ देकर उन्हें विजयी न बनाते और ऋषि दयानन्द अन्याय, अत्याचार व विदेशी शासको सहित अविद्यायुक्त मत जो मनुष्यों के दुःख का कारण बनते हैं, उनका खण्डन व विरोध न करते। ज्ञानी, विद्वान व योगी वही होता है जो असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन करता है और पक्षपात से सर्वथा रहित होता है। यह गुण ऋषि दयानन्द सहित वैदिक कालीन हमारे सभी पूर्वजों में था।

वेद ही सब मनुष्यों का परम धर्म क्यों हैं? इसका प्रथम उत्तर तो यह है कि यह सृष्टि के आरम्भ में ही सीधा ईश्वर से प्राप्त हुआ था। अन्य सभी मत–पंथ–सम्प्रदाय आदि ईश्वर से

आविर्भूत न होकर अविद्यायुक्त अल्पज्ञ मनुष्यों द्वारा प्रवर्तित हैं। वेदों का अध्ययन करने पर वेद में कोई अविद्यायुक्त मान्यता दृष्टिगोचर नहीं होती। वेद सब सत्य विद्याओं से युक्त हैं। वेदों का ज्ञान किसी एक जाति, समुदाय, देश अथवा क्षेत्र विशेष के लिये न होकर विश्व के सभी मानवों के लिये है जिससे मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होती है। वेदों में विश्व को **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का सन्देश दिया गया है अन्य मतों में ऐसा नहीं है। अन्य मतों में तो अपने मत को श्रेष्ठ मानने तथा दूसरों के श्रेष्ठ मत को भी निरस्कृत मानने के विचार वा भावनायें मिलती हैं। वेद दूसरे भटके हुए लोगों का मतान्तरण वा धर्मान्तरण करने की बात न कह कर उनके विचारों व ज्ञान की शुद्धि करने की प्रेरणा करते हैं। अन्य मत– मतावलम्बी अपने राजनीतिक व अन्य स्वार्थों की पूर्ति के लिये भोलेभाले अशिक्षित व श्रद्धावान लोगों का छल, प्रलोभन व भय से मतान्तरण वा धर्मान्तरण कराते हैं जो मानवीय दृष्टि से अनुचित व अधर्म होता है। इतिहास में ऐसे दुष्कर्मों के सैकड़ों उदाहरण मिलते हैं। संसार में कोई भी मत, सिद्धान्त, मान्यता व कथन या तो सत्य होता है या असत्य या फिर सत्यासत्य मिश्रित। मत–मतान्तरों में जो सत्य बातें हैं वह सब वेदों से ही ली गई हैं जो मत–मतान्तरों के अस्तित्व में आने के पहले से विद्यमान थीं। सभी मतों में इसके साथ असत्य एवं असत्य मिश्रित मान्यतायें भी हैं जो कि त्याज्य हैं। इनकी असत्य व असत्य मिश्रित मान्यतायें ही इन्हें अस्वीकार्य सिद्ध करती हैं।

ऋषि दयानन्द ने अपने समय में किसी मत–मतान्तर के आचार्य व विद्वान का वेदों व वैदिक धर्म पर किसी प्रश्न का उत्तर देने से इनकार नहीं किया जबकि अन्य मत–मतान्तर के लोग अपने व दूसरे मतों के लोगों की शंकाओं का समाधान नहीं करते। उनका स्वभाव है कि वह दूसरे मत के बुद्धिजीवियों के प्रश्नों को सुनकर क्रुद्ध होते हैं। अनेक मत अपने अनुयायियों को प्रश्न व शंका करने का अधिकार भी नहीं देते। ऐसी स्थिति में वह धर्म अथवा सत्य–धर्म कैसे कहे व माने जा सकते हैं? वेद धर्म की महत्ता यह है कि इसका पालन करने से किसी मनुष्य को कोई हानि नहीं होती अपितु लाभ होते हैं जबकि अन्य मतों की ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनके कारण दूसरों को परेशानी व कठिनाईयां उठानी पड़ती हैं। सरकार व व्यवस्था भी ऐसे कार्यों पर रोक लगाने में असमर्थ दिखती है। वैदिक धर्म अग्निहोत्र यज्ञ आदि उपायों द्वारा वायु, जल तथा भूमि को शुद्ध रखने सहित सभी प्राणियों वा पशुओं पर दया व अहिंसा का व्यवहार करने की प्रेरणा करता है जबकि अनेक मत इसका पालन नहीं करते। अतः दया व अहिंसा से रहित किसी मत को धर्म की संज्ञा देना उचित नहीं है। धर्म का एक अर्थ ही परहित व दूसरों के दुःखों को बांटना व दूर करना है। यदि हम किसी प्राणी को दुःख देते हैं व हिंसा, छल, प्रलोभन तथा भय आदि का सहारा लेते हैं तो ऐसा कार्य धर्म कदापि नहीं हो सकता। धर्म का अर्थ मत नहीं होता अपितु कर्तव्य होता है। जो मत व मतान्तर मनुष्य–मनुष्य में धर्म, मत व सम्प्रदाय आदि के आधार पर भेद करते हैं, वह धर्म धर्म कदापि नहीं कहे जा सकते क्योंकि धर्म का एक अर्थ सत्याचरण भी है। इन सब कारणों से हमें वेद व वेदानुकूल ग्रन्थों सहित सत्य पर आधारित अकाट्य सत्य मान्यतायें व सिद्धान्त ही धर्म प्रतीत होते हैं। इस कसौटी पर केवल वेद और ऋषियों के वेदानुकूल ग्रन्थ ही सत्य सिद्ध होते हैं।

महात्मा वेदभिक्षु जी का प्रशंसनीय जीवन व वेदप्रचार कार्य

(आर्यसमाज के महाधन : पुण्य तिथि 21 दिसम्बर)

—मनमोहन कुमार आर्य

महात्मा वेदभिक्षु जी ऋषि दयानन्द के प्रमुख अनुयायियों में से एक थे। आपने वेद प्रचार के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किया। हिन्दुओं के घर–घर में वेद पहुंचाने की आपने योजना बनाई थी और चारों वेदों का आकर्षक व भव्य रूप में भाष्य प्रकाशन किया था। आपने इस वेदभाष्य को राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में विज्ञापनों के द्वारा प्रचार कर उसे सहस्रों लोगों के घरों में पहुंचाया। इससे पूर्व वेदप्रचार का ऐसा अभियान किसी ने नहीं चलाया था। आपके द्वारा स्थापित दयानन्द–संस्थान, दिल्ली एवं यहां से प्रकाशित जनज्ञान मासिक पत्रिका नियमित प्रकाशित हो रही है और इनके द्वारा वेद प्रचार हो रहा है। अपने जीवन में महात्मा वेदभिक्षु जी ने जिस उत्साह एवं समर्पण भाव से वेद प्रचार किया, खण्डनात्मक साहित्य प्रकाशित किया, सरकार एवं विरोधियों के लगभग 45 मुकदमें झेले, उनसे वह ऋषि दयानन्द के एक निर्भीक, साहसिक एवं समर्पित योद्धा सिद्ध होते हैं। उनका जीवन हमें व सभी ऋषि भक्तों को प्रेरणा देने के साथ सबका मार्गदर्शन करता है। वह जनज्ञान पत्रिका में जो लिख गये हैं वह आज भी प्रासंगिक एवं उपयोगी है। हमें उससे लाभ उठाना चाहिये। इससे हमारा जीवन सार्थक एवं उपयोगी हो सकेगा और हम वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में अपना योगदान कर अपने जीवन को सफल कर सकते हैं। इसी दृष्टि से हम पाठकों के लाभार्थ उनके जीवन एवं कार्यों का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

महात्मा जी का वानप्रस्थ में प्रवेश करने से पूर्व का नाम श्री भारतेन्द्रनाथ था। आपका जन्म 14 मार्च सन् 1928 को डफरिन अस्पताल कानपुर में हुआ था। आपकी माताजी का नाम श्रीमती विद्यावती था जो भारत की प्रथम महिला मजिस्ट्रेट रहीं थीं। आपके पिता का नाम श्री गयाप्रसाद शुक्ल था जो उन्नाव के एक ग्राम बीघापुर के निवासी थे। आपके माता व पिता दोनों ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी रहे। ऋषि दयानन्द ही देश के वह महापुरुष थे जिन्होंने प्रथम देश को स्वदेशी, स्वराज्य और सुराज्य का मन्त्र दिया था और विदेशी राज्य को स्वदेशी राज्य की तुलना में सर्वोपरि व उत्तम बताया था। आर्यसमाज की विचारधारा में अहिंसा का सम्मान किया जाता है परन्तु इसके साथ ही आर्यसमाज यथायोग्य व्यवहार करने का पक्षधर है। आर्यसमाज की यह विचारधारा ईश्वर और वेद की देन है और यह तर्क की कसौटी पर भी सुदृढ़ व खरी है। आजादी के क्रान्तिकारी व अहिंसात्मक आन्दोलन में भाग लेने वाले अधिंकाश लाखों लोग ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रेरित थे। एक अनुमान के अनुसार प्रत्येक आर्यसमाजी देश की आजादी की भावना से युक्त था। वह भीतर से अंग्रेजों का चापलूस व सहयोगी नहीं था। सभी आर्यजन वैदिक धर्म सापेक्ष देशवासी थे। मनुष्य का धर्म एक ही होता है। धर्म से निरपेक्ष होने का मतलब सत्य, अहिंसा, सदाचार, परोपकार, अपरिग्रह आदि श्रेष्ठ आचरण के प्रति निरपेक्ष व उदासीन होना

होता है जो कि किसी समाज व देश के लिये श्रेयस्कर नहीं होता। महात्मा वेदभिक्षु जी के माता पिता दोनों ही ने देश की आजादी के लिये आन्दोलन किया था। आर्यसमाज और देश के प्रति भक्ति सहित स्वदेशी व स्वराज्य के सर्वोपरि उत्तम संस्कार महात्मा जी को अपने माता–पिता से मिले थे। इन्होंने ही महात्मा जी के जीवन की भावी दिशा को निर्धारित किया था।

महात्मा जी की शिक्षा वर्तमान के पश्चिमी पाकिस्तान व पाकिस्तान के जेहलम नगर में हुई। यह स्थान हमारे कुछ नेताओं की अदूरदर्शिता के कारण वर्तमान में पाकिस्तान में है। महात्मा जी की शिक्षा जेहलम में आर्यसमाज द्वारा संचालित एक वैदिक गुरुकुल में हुई थी। शिक्षा पूरी कर आपने डा० श्याम स्वरूप सत्यव्रत जी की पत्रिका ''संघ'' के सम्पादन का कार्यभार सम्भाला था। इन दिनों स्वतन्त्रता आन्दोलन अपनी निर्णायक व लक्ष्य प्राप्ति की स्थिति में पहुंच चुका था। इस कारण आपका अधिकांश समय व शक्ति देश की आजादी के आन्दोलन से जुड़े कार्यों में लगती थी। सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपकी सक्रिय भूमिका रही। आपने अपनी 14 वर्ष की आयु में ''स्वराज्य'' नामक एक हस्तलिखित समाचारपत्र निकाला। इस पत्र की कार्बन प्रतियां आप स्वयं वितरित करते थे। आपके इस कृत्य का ज्ञान शासक के प्रतिनिधियों को हो गया जिससे आप उनकी आंखों की किरकिरी बन गये। आपकी गिरफ्तारी के लिये पुलिस आपकी तलाश कर रही थी। आपने गिरफ्तार होने से अच्छा भूमिगत रहकर देश की आजादी की प्राप्ति से जुड़े कार्यों का करना उचित समझा। इस कारण आप 6 माह तक योगेश्वरानन्द आश्रम में रहे। आपने जेहलम के गुरुकुल में रहकर भी 6 माह तक अध्यापन कार्य भी किया था।

सन् 1950 में मुम्बई की एक संस्था ने आपको पत्रकार के रूप में नियुक्ति का पत्र भेजा जिसमें 250 रुपये मासिक वेतन सहित गाड़ी व निवास की सुविधायें दिये जाने का भी प्रस्ताव था। आपने आत्म–प्रेरणा से ईश्वर, वेद एवं ऋषि दयानन्द का कार्य करने का निर्णय लिया। आर्यसमाज के प्रति आपके निःस्वार्थ प्रेम व समर्पण के कारण आचार्य रामदेव जी के पुत्र पं0 यशपाल सिद्धान्तालंकार और पूर्व आर्य सांसद पं0 शिवकुमार शास्त्री की प्रेरणा से आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में 60 रुपये मासिक वेतन पर उपदेशक बन गये। उपदेशक बन कर आपने पंजाब प्रान्त में वैदिक धर्म का पूरे उत्साह से प्रचार किया। इसके पश्चात आपने आर्यसमाज के पत्रों 'आर्य', 'आर्यमित्र' तथा 'आर्योदय' आदि के सम्पादन के कार्य में भी अपनी सेवायें दी। आप इन पत्रों में अपने लेखों में पाठकों को वैदिक धर्म के प्रति निष्ठावान रहते हुए वैदिक सिद्धान्तों का पालन करने की प्रेरणा देते थे।

पं0 भारतेन्द्र नाथ जी का विवाह गाजियाबाद निवासी पं0 राम चरण शर्मा जी की सुपुत्री आयु0 राकेश रानी जी से सन् 1950 में हुआ था। विवाह के बाद आपने करनाल के प्रसिद्ध दानवीर चौधरी प्रताप सिंह एवं ईसाई मत के इतिहास का गहन ज्ञान रखने वाले पं0 ब्रह्मदत्त भारती जी के सहयोग से हिन्दी मासिक ''जनज्ञान'' पत्र का प्रकाशन व सम्पादन आरम्भ किया। यह पत्रिका अद्यावधि प्रकाशित हो रही है जिसकी सम्पादिका पं0 राकेशरानी जी एवं बहिन दिव्या आर्या जी हैं। अतीत में जनज्ञान के अंग्रेजी व मराठी संस्करण भी प्रकाशित किये गये हैं। वेद प्रचार के कार्यों को विस्तार देने के लिये आपने सन् 1972 में जनज्ञान पत्रिका के साथ–साथ वैदिक साहित्य का प्रकाशन भी किया। आपके द्वारा प्रकाशित साहित्य में चारों वेदों का चार जिल्दों में हिन्दी भाष्य सहित अनेक

विद्वानों के महत्वपूर्ण ग्रन्थ एवं खण्डन–मण्डन विषयक साहित्य सम्मिलित है। आपने वेद भाष्य की पचास हजार से भी अधिक प्रतियां देश–देशान्तर में प्रसारित की। दयानन्द–संस्थान से प्रकाशित कुछ प्रमुख ग्रन्थ हैं पं0 विश्वनाथ विद्यालंकार कृत सामवेद–भाष्य, पं. चमूपति कृत सोम–सरोवर, श्री रामविलास शारदा रचित ऋषि–जीवन–चरित, डा0 रामनाथ वेदालंकार रचित यज्ञ–मीमांसा, पं0 रघुनन्दन शर्मा रचित वैदिक–सम्पत्ति, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती जी रचित श्री–मद्दयानन्द–प्रकाश एवं एवं प्रो0 सन्तराम जी रचित संक्षिप्त– महाभारत आदि। अपने पवित्र संकल्पों को सुदृढ़ एवं सफल करने के लिये आपने दो वर्ष तक अन्न, नमक व शक्कर का परित्याग भी किया था।

वेद प्रचार का स्थाई केन्द्र स्थापित करने की दृष्टि से आपने सन् 1973 में देश की राजधानी दिल्ली में एक विशाल ''वेद–मन्दिर'' के निर्माण की योजना को कार्यरूप दिया। यह वेद–मन्दिर यमुना नदी के किनारे इब्राहीमपुर ग्राम के निकट स्थित है। यही आपका स्मारक भी है। इस केन्द्र को वर्तमान में आपकी सुपुत्री बहिन दिव्या आर्या जी संचालित कर रही हैं। आपकी एक प्रमुख गतिविधि मासिक पत्रिका ''जनज्ञान'' का प्रकाशन भी दयानन्द–संस्थान से निरन्तर किया जा रहा है।

महाभारत युद्ध के बाद आर्यमत में अनेक अन्धविश्वास एवं अतार्किक मिथ्या परम्पराओं का समावेश हुआ। इसी कारण बौद्ध व जैन मत अस्तित्व में आये थे। विदेशों में भी जरदुश्त वा पारसी मत, ईसाई व इस्लाम मतों का प्रादुर्भाव हुआ। आठवीं सदी में ही इस्लाम हमलावर मत के रूप में भारत में प्रविष्ट हुआ था और इसके बाद अंग्रेजों ने ईसाई मत का प्रचार व अपढ़ भोले–भाले ग्रामवासियों तथा दुर्गम स्थानों के निवासियों का धर्मान्तरण किया। बाद के दोनों मतों ने छल, बल तथा प्रलोभन एवं लोगों की अज्ञानता का लाभ उठाकर आर्य मतानुयायी लोगों का मतान्तरण व धर्मान्तरण किया। सन् 1980 में दक्षिण भारत के तमिलनाड राज्य के मीनाक्षीपुरम् गांव में सभी निवासियों को बलात् धर्मान्तरित कर विधर्मी बना दिया गया था। इन्हीं दिनों देश के अनेक भागों में साम्प्रदायिक दंगे हुए थे जिसमें हिन्दुओं के जानमाल की भारी क्षति हुई थी। इन घटनाओं से महात्मा वेदभिक्षु जी विक्षुब्ध एवं दुःखी थे। हिन्दुओं व आर्यों की रक्षा करने के लिये आपने **'हिन्दू रक्षा समिति'** का गठन किया था। इस समिति के प्रधान महान आर्य–हिन्दू नेता प्रो0 रामसिंह जी थे। आपने दंगा पीड़ितों के क्षेत्रों का दौरा कर वहां अनेक आर्य–हिन्दू सम्मेलन आयोजित किये थे। आपने इस समिति के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये अनेक राष्ट्रीय नेताओं से भेंट की थी। यह सब कार्य आपने अपने स्वास्थ्य की अत्यन्त विपरीत परिस्थितियों में किये। सन् 1979 में आपको खून की उल्टियां हुई थी और जिगर के रोग का दौरा पड़ा था। वेद धर्म में अटूट निष्ठा व समर्पण के कारण ही आप इन विपरीत परिस्थितियों में देश व धर्म रक्षा के कार्य कर रहे थे। आपके कार्यों का अनुमान मासिक परोपकारी पत्र के नवम्बर, 1983 अंक में प्रकाशित श्री अनिल लोढ़ा जी के एक लेख से लगता है। लोढ़ा जी के अनुसार हिन्दू रक्षा समिति की 1600 शाखायें स्थापित हुई थीं जिनके लाखों सदस्य थे। लगभग दो दर्जन प्रचार पुस्तिकाओं का लाखों की संख्या में प्रकाशन एवं वितरण किया गया था। आपके यह कार्य देश में जागृति उत्पन्न करने तथा विधर्मियों द्वारा हिन्दुओं का धर्मान्तरण रोकने में उपयोगी सिद्ध हुए थे।

महात्मा वेदभिक्षु जी ने बड़ी से बड़ी

चुनौतियों का सदैव धैर्य एवं साहस से सामना किया। आपके लेखों एवं आपके द्वारा प्रकाशित साहित्य पर सरकार की ओर से लगभग 45 मुकदमें किये गये। विधर्मियों की ओर से आपको जान से मारने की धमकियां भी मिलीं। इन सबसे आप कभी विचलित नहीं हुए और अपने लक्ष्य की ओर निर्भीकता से बढ़ते रहे। महर्षि दयानन्द जी का देहावसान 30 अक्तूबर, 1883 को अजमेर में हुआ था। सन् 1983 में आपके मोक्ष वा निर्वाण की शताब्दी का समारोह ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर ने अजमेर में 3 से 6 नवम्बर, 1983 को वृहद स्तर पर आयोजित किया था। देश विदेश से लाखों आर्य श्रद्धालु इस आयोजन में पधारे थे। इस आयोजन को सफल बनाने में आपने परोपकारिणी सभा को अपना सक्रिय सहयोग दिया था। आपने सभामंत्री श्रीकरण शारदा जी के साथ देश भर में घूम कर धन संग्रह किया। आप देहरादून भी आये थे। हमने आर्यसमाज धामावाला देहरादून में इन दोनों आर्य नेताओं के दर्शन किये थे। इन नेताओं से हमने समारोह में सहयोग हेतु शताब्दी टिकट प्राप्त किये थे और धनराशि संग्रहित कर सभा को प्रेषित की थी।

सन् 1969 में गोहत्या विरोधी वृहद एवं व्यापक आन्दोलन में आप परिवार सहित सक्रिय रहे। आप परिवार के सदस्यों सहित तिहाड़ जेल में भी रहे। अपने जीवन काल में महर्षि दयानन्द ने गोरक्षा पर विशेष महत्व दिया था और एक हस्ताक्षर अभियान भी चलाया था। ऋषि दयानन्द ने गोरक्षा पर एक अति महत्वपूर्ण पुस्तक गोकरुणानिधि भी लिखी व प्रचारित की थी। गोरक्षा के लिये महात्मा वेदभिक्षु जी का पुरुषार्थ एवं त्याग सराहनीय एवं अनुकरणीय रहा।

महात्मा वेदभिक्षु, प्रसिद्ध आर्य वैज्ञानिक डा0 स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती तथा प्रा0 राजेन्द्र जिज्ञासु जी परस्पर अन्तरंग मित्र थे। स्वामी सत्यप्रकाश जी उन दिनों दिल्ली में थे। वहां आपको अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार मिला। इस समाचार से आप कुछ विचलित हो गये थे। इस अवस्था में स्वामी जी ने महात्मा वेदभिक्षु जी को फोन करके अपने पास बुलाया और दिन भर अनेक सामाजिक विषयों पर चर्चा करते रहे। स्वामी जी ने महात्मा वेदभिक्षु जी को अपने पुत्र की मृत्यु की जानकारी नहीं दी। ऐसा उन्होंने संन्यास आश्रम की मर्यादा का पालन करने के लिये किया था। इस घटना से महात्मा वेदभिक्षु जी का आर्यसमाज के एक प्रसिद्ध एवं शीर्ष संन्यासी के साथ अन्तरंग हार्दिक सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है।

महात्मा वेदभिक्षु जी को 5 दिसम्बर 1983 को रोग का आक्रमण हुआ था। इसका उपचार पन्त अस्पताल, दिल्ली में कराया गया। 21 दिसम्बर को प्रातः 3.00 बजे आपने अपने परिचारकों को कहा कि सभी दरवाजे खोल दो। मैं इस संसार से जाना चाहता हूं। ऐसा ही किया गया और कुछ ही देर में आपने अपना शरीर त्याग दिया। उसी दिन दिल्ली की पंचकुईया श्मशान–भूमि में आपकी अन्त्येष्टि की गई थी। इस अन्त्येष्टि में आर्य जगत् के अनेक गणमान्य व्यक्तियों के साथ दिल्ली स्थिति समाजों व सभाओं के छोटे बड़े सभी अधिकारी व सदस्य भी सम्मिलित थे।

महात्मा वेदभिक्षु जी ने ऋषि दयानन्द को अपना आदर्श बनाकर उनके पदचिन्हों पर चलने का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। हिन्दू समाज की विधर्मियों से रक्षा के कार्य में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। दयानन्द संस्थान दिल्ली उनका पुण्य स्मारक है। यह स्थान वेद प्रचार का केन्द्र बना रहे यह हमारी कामना है। महात्मा जी को हम सश्रद्ध नमन करने सहित श्रद्धांजलि देते हैं।

हनुमान और सीता का संवाद

—ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी

अभी हनुमान अपनी कार्य सिद्धि का चिन्तन ही कर रहे थे कि इतने में रात्रि व्यतीत हो गई और ब्राह्म मुहूर्त में उठने वाले तथा वेद—वेदांग जानने वाले यज्ञकर्त्ताओं ने वेद—ध्वनि करनी आरम्भ कर दी जिसे सुन उस राक्षस नगरी में भी वैदिक कर्मों की महानता अनुभव करते हुए हनुमान अपने नित्य कर्म में लग गये।

इधर सूर्योदय को निकट जानकर बन्दी तथा भाट लोगों ने नाना विधि स्तुतियों से रावण को जगाया। रावण ने सुख—शय्या से उठकर प्रथम तो आवश्यक कर्म किया फिर अपने सम्बन्धियों सहित अपना नित्य कर्म समाप्त किया।

नित्य कर्म करने के पीछे विवेक—हीन रावण, सीता को कुमार्ग की ओर प्रेरित करने के लिए अशोक वाटिका में गया।

वहाँ वह सीता को अनेक प्रकार से लोभ और भय दिखाकर अपने अधीन करने की चेष्टा करता है, पर सीता किसी तरह भी अपने निश्चय से विचलित नहीं होती। अन्त में रावण चला जाता है। तब उसकी आज्ञानुसार राक्षसियाँ अनेक प्रकार से सीता को भय दिखलाती है। उसी समय त्रिजटा नाम की राक्षसी अपने स्वप्न की बात कर सीता को धैर्य देती है और उसकी बातें सुनकर वे घोर राक्षसियाँ भी शान्त हो जाती है। सीता विरह से व्याकुल होकर विलाप करने लग जाती है।

इस सारे बीच में हनुमान विस्मय के साथ सीता, रावण, अन्य राक्षसियों तथा त्रिजटा की सारी बातचीत सुनते रहे थे। उन्होंने विचारा कि यदि मैं इस अदृष्ट दुःखित देवी को बिना आश्वासन दिये चला गया, तो मुझ पर दोष लगेगा। दूसरा मेरे चले जाने पर अपना कोई रक्षक व सहायक न पाकर यह यशस्विनी प्राणों को त्याग देगी। अतः जिस प्रकार पूर्ण चन्द्रानन राम आश्वासन देने योग्य हैं, वैसे ही यह जानकी है। परन्तु क्या किया जाय? राक्षसियों के सम्मुख आश्वासन देना असम्भव है। फिर शीघ्र रात्रि व्यतीत होने वाली है। यह भी निश्चित नहीं कि कल को सीता रहे व न रहे। यदि मैं सीता का पूर्ण सन्देश लिये बिना चला गया तब एक तो श्रीराम को अपार कष्ट होगा और उससे अनेक अनर्थ होंगे। दूसरे महाराज सुग्रीव के माध्यम से मेरा राष्ट्रोद्धार प्रयत्न भी व्यर्थ ही चला जायेगा।

अतः जिस भाँति भी हो सके, मैं सीता को आश्वासन दूं परन्तु क्या करूँ? एक ओर तो भारी विघ्न यह है कि—यदि मानुषी भाषा संस्कृत द्विजातियों की भांति बोलूं तो सीता मुझे रावण मान कर भयभीत हो जायेगी और यदि वानरी भाषा(मातृ बोली) बोलूँ तो वह समझेगी ही नहीं:—

यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।।

अस्तु! जो भी हो मैं सीता को मानुषी राष्ट्रभाषा (संस्कृत) से ही सान्त्वना दूँ।

इस भाँति तर्कणा करने के पश्चात्

हनुमान ने निश्चय किया कि मैं इक्ष्वाकुओं में श्रेष्ठ राम का गुणानुवाद गायन करूं, जिससे कदाचित सीता मुझ पर श्रद्धा कर ले और अपना कुशल समाचार बता दे। यह निश्चय कर हनुमान ने राम के जन्म से लेकर वनवास, सीताहरण, सुग्रीव मैत्री तथा उसकी ढूँढ़ के लिए समुद्र पार कर लंका तथा अशोक वाटिका में आना कह दिया।

श्री रघुनाथ जी का आद्योपान्त समस्त चरित्र सुनकर सीता को बड़ा विस्मय हुआ। अध्यात्म रामायण में लिखा है कि अन्त में उन्होंने सोचा कि यह स्वप्न या भ्रम तो नहीं है। ऐसा विचार कर वे कहने लगीं।

येन मे कर्णपीयूशं वचनं समुदीरितम्।
स दृश्यतां महाभागः प्रियवादी ममाग्रतः।।
(५।३।१८)

''जिन्होंने मेरे कानों को अमृत के समान प्रिय लगने वाले वचन सुनाये वे प्रियभाषी महाभाग मेरे सामने प्रकट हों।''

यह वचन सुनकर हनुमान जी वृक्ष से नीचे उतर माता सीता के सामने बड़ी विनय से खड़े हो जाते हैं और हाथ जोड़ कर उन्हें प्रणाम करते हैं। अकस्मात् एक वानर को अपने सामने खड़ा देखकर सीता के मन में यह शंका होती है कि कहीं रावण तो मुझे छलने के लिए नहीं आ गया है। यह सोचकर वे नीचे की ओर मुख किये हुए ही बैठी रहती है। रामचरित मानस में उस समय श्री हनुमान जी के वचन इस प्रकार हैं—

रामदूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुना निधान की।।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम कहूँ सहिदानी।।

उसके बाद श्री जानकी जी के पूछने पर उन्होंने जिस प्रकार वानरराज सुग्रीव के साथ भगवान् श्री राम की मित्रता हुई, वह सारी कथा विस्तारपूर्वक सुना दी तथा श्री राम और लक्ष्मण के शारीरिक चिन्हों एवं उनके गुण और स्वभाव का भी वर्णन किया—

ये सब बातें सुनकर जानकी जी को बड़ी प्रसन्नता हुई। इस प्रसंग का वर्णन वाल्मीकीय रामायण में बड़ा विस्तृत और रोचक है।

हनुमान के मुख से राम का यशोगान

श्रीराम की प्रशंसा में हनुमान जी कहते हैं—

''मातः! राम का मुख चन्द्रमा के समान, नेत्र कमलवत् तेज सूर्य सम और क्षमा पृथिवी के तुल्य है। वह बुद्धि से बृहस्पति, यश से देवराज इन्द्र की उपमा रखते हैं। वह जीवलोक के रक्षक, अपने बन्धुओं की रक्षा करने वाले, परम तपस्वी होकर अपने व्रत और धर्म के रक्षक हैं। भामिनि! राम चारों वर्णों की मर्यादा के बनाने तथा रक्षा करने वाले हैं। राम सबसे पूजित होकर भी ब्रह्मचर्य धारण करने हेतु सदा प्रकाशमान रहते हैं।

राम साधुओं के उपकार को मानने वाले, सत्कर्मों के प्रचार को जानने वाले, राजनीति में विनीत, ब्राह्मणों के उपासक और ज्ञान तथा शील से सम्पन्न हैं। यजुर्वेद में निपुण, वेदज्ञ पुरुषों से पूजित धनुर्वेद तथा अन्यान्य वेदांगो में निपुण हैं।

सत्यधर्मरतः श्रीमान्संग्रहानुग्रहे रतः।
देशकालविभगज्ञः सर्वलोक प्रियंवदः।।
सु० ३५।२१

भ्राता चास्य च वैसात्रः सौमित्ररमितप्रभः। अनुरागेण च रूपेण गुणेश्चापि तथाविधिः।।
सु० ३५।२२

सारांश यह कि राम सत्य धर्म में रत, लक्ष्मीवान् संग्रह और अनुग्रह में प्रवीण, देश काल के जानने वाले तथा सर्व लोगों से मीठा तथा हितकारी वचन बोलने वाले हैं। उनके दूसरे भाई लक्ष्मण भी महा प्रभा वाले, स्नेह तथा अन्य गुणों में राम के ही समान हैं।

वे दोनों भाई तुमको ढूँढ़ते हुए वानरराज सुग्रीव को, जो कि बड़े भाई बाली से अपमान पूर्वक गृह से निकाले हुए थे, ऋष्यमूक पर्वत पर मिले। वहाँ दोनों की परस्पर परम प्रीती हो गई तथा सुग्रीव महाराज ने तुम्हारे ढूँढ़ने की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए मुझे यहाँ भेजा है।

देवि! राम तुम्हारे दर्शन के लिए सन्तप्त हो रहे है–

त्वत्कृते तमनिद्रा च शोकश्चिन्ता च राघवम्। तपयन्ति महात्मानमगन्यागारमिवाग्नयः।।६५।४६

तुम्हारे वियोग में महात्मा राम को तम, निद्रा, शोक तथा चिन्ता इस भाँति जलाते हैं जैसे अग्नियाँ अग्नि–भवन को जलाती हैं।।

देवि! शुभ लक्षणों वाले लक्ष्मण, वीर्यवान् तुम्हारे पति की आराधना में शिष्यवत् लगे हुए हैं केवल मैं सुग्रीव की आज्ञा से फिरता–फिरता तुम्हारे दर्शनों के लिए यहाँ हूँ तथा इस शुभ सम्वाद से व तुम्हारे दर्शन रूपी सन्देश से अनेकों भयग्रस्त वानरों के शोक को दूर करुँगा। मेरा लंका में आना व्यर्थ नहीं गया क्योंकि तुम्हारे दर्शनरूपी यश की प्राप्ति मुझे ही हुई है। सीत! तुम्हारे भी शोक का अन्त अब निकट आया हुआ है क्योकि अब रघुकुल तिलक श्रीराम शीघ्र ही रावण को उसके पुत्र–पौत्र और सम्बन्धियों सहित नाश करके तुमको प्राप्त होंगे तथा यहाँ से तुमको वह अपने साथ ले जावेंगे।

यह सुनकर सीता बहुत प्रसन्न हुई और उसने हनुमान का गुणानुवाद करके उनके विषय में अपना विश्वास प्रकट किया।

आर्य वैदिक विदुषियाँ

1. आचार्या मेधा देवी, वाराणसी	05422360340	12.आचार्या सुनीता आर्या, दिल्ली	9891175076
2. आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती, नजीबाबाद	9412824424	13.श्रीमती प्रभा शास्त्री, बरेली	9412376592
3. श्रीमती पुष्पा शास्त्री, रेवाड़ी	9416063677	14.आचार्या डॉ० सुधा शास्त्री, दिल्ली	9871218737
4. सुश्री नन्दिता शास्त्री, वाराणसी	9235539740	15.श्रीमती मिथलेश शास्त्री, हरिद्वार	9411373539
5. डॉ० विजय लक्ष्मी, मुजफ्फरनगर	9412307123	16.आचार्या सूर्यदेवी, शिवगंज (राज.)	9680674789
6. डॉ० अन्नपूर्णा, देहरादून	9319054421	17.श्रीमती मृदुला अग्रवाल, कोलकत्ता	9836841051
7. डॉ० प्राची दीदी, बागपत	9837341124	18.कु० अंजली आर्या, मुजफ्फरनगर	9719566946
8. कु० पूनम व प्रवेश आर्या, रोहतक	9416630916	19.डॉ० सरस्वती चतुर्वेदी, वाराणसी	05422315630
9. आचार्या धारणा शास्त्री, शिवगंज	02976220629	20.श्रीमती सुमित्रा विद्यालंकार, औरेया	9456002544
10.श्रीमती सुदेश आर्योपदेशिका, दिल्ली	9810448252	21.श्रीमती मधुबाला शास्त्री, पानीपत	9466029683
11.श्रीमती कमला शास्त्री, दिल्ली	9810134431	22.श्रीमती लक्ष्मी भारती, हरियाणा	9813237212

राजा महेन्द्र प्रताप

—स्वामी यतीश्वरानन्द जी

राजा महेन्द्र प्रताप ब्रिटिश समय के रजवाड़ों में अकेले ही व्यक्ति थे जिन्होंने देश की आजादी तथा विकास को सर्वोपरि रखा तथा इस दिशा में ठोस कार्य किये। अपने समय के प्रसिद्ध समाज–सुधारक, लेखक, पत्रकार व क्रान्तिकारी इस सच्चे देशभक्त को ''आर्यन पेशवा'' के नाम से भी जाना जाता था।

महेन्द्र प्रताप का जन्म 01 दिसम्बर 1886 को हाथरस जिले के मुरसान राज परिवार में हुआ था। ये राजा घनश्याम सिंह के तीसरे पुत्र थे। घनश्याम सिंह के बड़े पुत्र दत्त प्रसाद बाद में मुरसान की गद्‌दी पर बैठे, मंझले पुत्र बलदेव सिंह को बलदेवगढ़ की जागीर मिली और सबसे छोटे पुत्र खड्ग सिंह को तीन वर्ष की उम्र में हाथरस के राजा हरनारायण सिंह ने गोद ले लिया। आठ वर्ष तक खड्ग सिंह मुरसान में ही रहे पर बाद में इनका नाम महेन्द्र प्रताप हो गया। हाथरस आने पर लोग इन्हें राजा कहने लगे क्योंकि ये हाथरस राज्य के उत्तराधिकारी थे यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने इन्हें राजा की उपाधि नहीं दी व कुंवर कहकर ही सम्बोधित किया। हरनारायण ब्रिटिश सरकार के भक्त थे परन्तु महेन्द्र प्रताप उस समय इतने छोटे थे कि उन पर इस बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। 1895 में हरनारायण सिंह की मृत्यु हो गई तथा 1906 में हाथरस रियासत का अधिकार महेन्द्र प्रताप के हाथ में आ गया। महेन्द्र प्रताप के पिता घनश्याम सैयद अहमद खाँ के मित्र थे तथा उन्होंने एम.ए.ओ. कॉलिज को काफी दान दिया था। महेन्द्र प्रताप ने 1895 में गवर्नमेंट हाईस्कूल अलीगढ़ में दाखिला लिया तथा फिर अलीगढ़ स्थित एम.ए.ओ. कॉलिज में आ गये। 1902 में इनका विवाह जींद के राजघराने में बलबीर कौर से कर दिया गया। इस विवाह के लिये दो विशेष ट्रेनों में मथुरा से जींद बरात गई तथा जींद के राजा ने उस समय 3 लाख 75 हजार रुपये खर्च किये।

1905 में महेन्द्र प्रताप के भाई बलदेव इन्हें एक अंग्रेज पुलिस अधिकारी (एस.पी.) से मिलाने ले गये। महेन्द्र ने देखा कि जब भाई ने अधिकारी को सलाम किया तो अधिकारी ने केवल हाथ मिलाया व सलाम का जवाब नहीं दिया। बातों–बातों में इन्होंने उस अंग्रेज अधिकारी से कहा कि हमारे पुरखे अंग्रेजों से लडे थे। अधिकारी हैरान रह गया। इस घटना ने महेन्द्र प्रताप के मन पर काफी प्रभाव डाला तथा इन्हें समाज सेवा की ओर मोड़ दिया। इन्होंने अलीगढ़ के डी.ए.वी. कॉलेज व बनारस की काशी विद्यापीठ को भूमि दान दी तथा मथुरा में कलेक्टर को दस हजार रुपये बैंक खोलने के लिए दिये। साथ ही 25 हजार रुपये में पूरे मथुरा में पाठशालायें खुलवाई। 1911 में इन्होंने वृन्दावन में 80 एकड भूमि आर्यप्रतिनिधि सभा को दान की। अलीगढ़ से इन्होंने एम.ए. की परीक्षा पास की परन्तु राजा बनने के बाद स्नातक की पढ़ाई पूरी नहीं कर सके। तब बंगाल में ब्रिटिश विरोधी लहर चल रही थी तथा बंग–भंग आंदोलन का स्वदेशी का संदेश सारी दिशा में फैलने लगा था। महेन्द्र प्रताप ने भी राजनीति में रूचि लेनी प्रारम्भ कर दी तथा

ये 1906 की कलकत्ता कांग्रेस में परिवार वालों के विरोध के बावजूद शामिल हुए। वहाँ आकर इन्होंने स्वदेशी शिक्षा तथा उद्योगों को बढ़ावा दिया। 24 मई 1909 को अपने महल में महेन्द्र प्रताप ने एक भोज का यह कहकर आयोजन किया कि इन्हें पहला पुत्र हुआ है। तब इन्होंने मेहमानों को बताया कि वास्तव में इन्होंने वृन्दावन में एक महाविद्यालय तथा तकनीकी संस्थान स्थापित किया है तथा इसे 'प्रेम तकनीकी महाविद्यालय' नाम दिया गया है। इस संस्थान को इन्होंने अपनी आधी सम्पत्ति दान कर दी। तब मदन मोहन मालवीय ने इन्हें सारी सम्पत्ति दान करने से रोक लिया था। 1910 में कांग्रेस के प्रयाग अधिवेशन में इन्होंने अपने खर्च से एक अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन का आयोजन किया।

महेन्द्र प्रताप छुआछूत के घोर विरोधी थे। उस समय छुआछूत का विरोध दुर्लभ था, वो भी रजवाड़ों की ओर से। 1911 में इन्होंने अल्मोड़ा में तब अछूत मानी जाने वाले एक परिवार के साथ भोजन किया तो इनके कई साथियों ने बहिष्कार की धमकी दे डाली। फिर 1912 में इन्होंने आगरा में एक मेहतार परिवार के साथ भोजन किया। 1912 में ही ये अपनी पहली विदेश यात्रा पर तुर्की गये। कारण था युद्ध में घायल सैनिकों की सेवा का प्रयास। पर इन्हें सीमा पर नहीं जाने दिया गया। वस्तुतः मुसलमान न होने के कारण इनके सेवा–भाव का महत्व नहीं समझा गया।

धीरे–धीरे महेन्द्र प्रताप की देश–भक्ति ब्रिटिश शासन के क्रान्तिकारी विरोध का रुप लेनी लगी। ये अपने राज्य में सामूहिक रूप से ब्रिटिश कपडों की होली जलाते थे। फिर विश्वयुद्ध छिड़ने के बाद इन्होंने जर्मनी के सहयोग से देश को आजाद कराने का प्रयास किया। इन्होंने 20 दिसम्बर 1914 को देश छोड़ दिया तथा अगले महीने वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय के प्रयासों से इन्हें स्विट्जरलैण्ड से जर्मनी आने का न्यौता मिल गया। यह न्यौता बर्लिन कमेटी की ओर से था जो एक मिशन अफगानिस्तान भी भेज चुकी थी। जब श्यामजी कृष्णवर्मा तथा लाला हरदयाल ने महेन्द्र प्रताप को विरेन की गतिविधियों के बारे में बताया तो महेन्द्र प्रताप ने जर्मनी के सम्राट विल्हेल्म द्वितीय(कैसर) से निजी मुलाकात पर जोर दिया। विरेन ने जेनेवा पहुँचकर कैसर की उनसे मिलने की इच्छा के बारे में बताया और ये दोनों साथ बर्लिन आ गये। महेन्द्र प्रताप को ''आर्डर ऑफ रैड ईगल'' से सम्मानित करने के बाद कैसर ने अफगानिस्तान की ओर से ब्रिटिश भारत पर हमले के सम्बन्ध में बात की। महेन्द्र प्रताप की इच्छा पर इन्हें पोलेण्ड की सीमा के पास एक सैनिक मोर्चे पर लाया गया ताकि वे सेना की नीति व कार्यविधि का स्वयं अध्ययन कर सकें। 10 अप्रैल 1915 को जर्मन राजनीतिज्ञ वॉन हैनटिंग के साथ मौलवी बरकतुल्ला व महेन्द्र प्रताप ने बर्लिन छोड़ दिया। फिर विएना में वे मिश्र के प्रतिनिधियों से मिले तथा तुर्की में इन्होंने अनवर पाशा से भेंट की जो तुर्की के सुल्तान का दामाद व रक्षा मंत्री था। 01 अक्टूबर 1915 को वे काबुल पहुँचे तथा वहां के अमीर (अफगानिस्तान के शासक) हबीबुल्ला से भेंट की। इन प्रयासों के बाद 01 दिसम्बर 1915 को महेन्द्र प्रताप ने काबुल में अस्थाई भारत सरकार की घोषणा की जिसके राष्ट्रपति महेन्द्र प्रताप व प्रधानमंत्री बरकतुल्ला थे। बरकतुल्ला ने सभी देशवासियों से ब्रिटिशों

के विरुद्ध हथियार उठाने का अनुरोध किया। विश्व–युद्ध में जर्मनी की स्थिति बिगड़ने पर यह योजना भी कभी लागू नहीं हो सकी। पर जवाब में ब्रिटिश सरकार ने इनके सिर पर ईनाम घोषित कर दिया तथा इनके राज्य पर हमला कर दिया। 1917 में रूस के क्रान्तिकारी नेता व्लादीमीर लेनिन ने इन्हें मास्को आमंत्रित किया।

कई देशों में रहने के बाद महेन्द्र प्रताप 1925 में जापान चले गये। 1929 में इन्होंने जापान में 'वर्ड फेडरेशन' नामक मासिक पत्रिका निकाली तथा पत्रकार बन गये। द्वितीय विश्वयुद्ध तक ये टोक्यो में रहे तथा वर्ड फेडरेशन सेंटर में काम करते रहे। वहीं इन्होंने 1940 में 'एक्जीक्यूटिव बोर्ड ऑफ इण्डिया' नामक संस्था का गठन किया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार ने इन्हें भारत आने की इजाजत दे दी।

यह उल्लेखनीय है कि 1932 में इन्हें नोबेल शांति पुरस्कार के लिये नामित किया गया था क्योंकि इन्होंने अपनी सम्पत्ति गरीबों की शिक्षा के लिये दान कर दी थी। गाँधी इन्हें महान देशभक्त मानते थे (हरिजन, 04 जुलाई 1929)। महेन्द्र प्रताप 09 अगस्त 1946 को मद्रास पहुँचे तथा आते ही गाँधी जी से मिलने वर्धा गये। आजादी के बाद वे पुनः समाज सेवा के कार्यों में जुट गये। मथुरा की जनता के आग्रह पर 1957 का लोकसभा चुनाव महेन्द्र प्रताप ने निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में लड़ा तथा भारी मतों से विजयी रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इन्होंने स्वतंत्रता–सेनानी एसोसिएशन के गठन में भूमिका निभाई तथा उसके अध्यक्ष चुने गये। ये पंचायती राज के समर्थक थे तथा गाँवों के विकास के लिये इनका विशेष प्रयास रहता था।

29 अप्रैल 1979 को 93 वर्ष की आयु में इस पवित्र आत्मा का देहावसान हो गया। यह अंदाजा लगाना कठिन नहीं है कि यदि कुछ और रजवाडे इनके दिखाए मार्ग पर देश–सेवा में लगते तो हमारे देश की स्थिति में कितना सुधार हो सकता था। ये अपना जीवन ऐशो–आराम में बिता सकते थे पर राष्ट्र सेवा के लिये इन्होंने निर्वासन झेलना स्वीकार किया तथा सादा जीवन बिताते हुए समाज में शिक्षा, शुचिता और बराबरी के स्वप्न को पूरा करने का प्रयास करते रहे। ऐसे क्रान्तिकारियों के हम सदा ऋणी हैं।

आर्य भजनोपदेशक

1. पं० सत्यपाल पथिक, अमृतसर	9815260605	10. श्री टिकम सिंह, बिजनौर	9927540027
2. श्री नरेश दत्त आर्य, बिजनौर	9411428312	11. पं० सुभाष राही, मुजफ्फरनगर	9760895671
3. श्री सत्यपाल सरल, देहरादून	9411394588	12. श्री धर्म सिंह आर्य, सहारनपुर	9719619766
4. श्री श्यामवीर राघव, दिल्ली	9818118218	13. श्री रवीन्द्र कुमार आर्य, सहारनपुर	9412648343
5. श्री कुलदीप आर्य, बिजनौर	9837190035	14. श्री कुंवर उदयवीर, मथुरा	9719307825
6. पं० संजीव आर्य, बदायूँ	9997386782	15. पं० सतीश सुमन आर्य, मुजफ्फरनगर	9897302352
7. श्री कंचन कुमार, दिल्ली	9868717038	16. श्री सुखपाल विश्वकर्मा, सहारनपुर	8761476866
8. श्री योगेश दत्त आर्य, बिजनौर	9412118288	17. कु० अंजली आर्या	9992415610
9. श्री रामचन्द्र भारद्वाज, बिजनौर	9837606731	18. श्री रुवेल सिंह आर्यवीर, यमुनानगर	8278470215

स्वास्थ्य रक्षक घरेलू नुस्खे

—वैद्य डॉ० प्रेम दत्त पाण्डेय जी

रोग और पथ्य–अपथ्य

औषधि सेवन से भी अधिक महत्व पथ्य–अपथ्य के पालन को देना चाहिए क्योंकि बदपरहेजी रोग का बल बढ़ाती है और औषधि के प्रभाव को नष्ट करती है। यहां कुछ रोगों के रोगियों के लिए हितकारी पथ्य का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

एक बात ध्यान में रखें कि पथ्य पदार्थों का सेवन न करना भी अपथ्यकारी सिद्ध होता है अतः पथ्य पदार्थों का सेवन करना ही चाहिए। कुछ रोगों के रोगियों के लिए उपयोगी पथ्य–पदार्थों का विवरण इस प्रकार है–

अरुचि– अदरक, बिजौरा, अनार या नींबू में से किसी एक, या दो या चारों का रस मिला कर पीना चाहिए।

भस्मक– भोजन करने के थोड़ी देर बाद फिर से भूख लगने लगती है इसे भस्मक रोग कहते हैं। इस रोग के रोगी को केले का गूदा 50 ग्राम और 1 चम्मच शुद्ध घी दिन में दो बार सुबह शाम खाना चाहिए।

अग्निमान्द्य– मन्दाग्नि वाला व्यक्ति गुनगुने पानी का सेवन करे और तम्बाकू रहित पान खाकर पहली दो पीक थूक कर बाद में पीक निगलता रहे।

खूनी बावासीर– मक्खन–मिश्री, नागकेसर, शुद्ध घी, शक्कर, आंवला–चूर्ण या आंवले का मुरब्बा सेवन करना चाहिए। बादी बावासीर हो तो शुद्ध घी व त्रिफला चूर्ण मिला कर सेवन करना चाहिए।

खांसी– यदि कफ युक्त खांसी हो तो अदरक का रस और शहद समान मात्रा में, पका पान, तुलसी के पत्तों का रस व मिश्री थोड़ी–थोड़ी मात्रा में, सेवन करना चाहिए। खांसी सूखी हो, कफ बड़ी मुश्किल से निकलता हो तो मुलहठी का काढ़ा या अड़ूसे को शहद मिला कर लेना चाहिए। खटाई बिल्कुल भी नहीं खाना चाहिए।

पथ्य की मात्रा–किसी पथ्य पदार्थ को अधिक मात्रा में सेवन करना उसे 'अपथ्य' बना देता है अतः आहार हो या औषधि, उचित मात्रा में दोनों के लिए जरूरी होती है। उचित मात्रा भी पथ्य है। किसी पथ्य–पदार्थ को भी अपनी रूचि के अनुकूल मात्रा में ही खाना चाहिए। रुचि के विपरीत खाना हानिकारक होता है। गरम पानी, ठण्डा पानी, चावलों का धोवन और दूध की मात्रा 50 से 80 मिलि. मीठे अनार का रस 20 मिलि. मिश्री, मक्खन, आंवले का रस, मुरब्बा, गुलकन्द(एक वर्ष पुराना), गुड़ (1 से 3 वर्ष पुराना) कागजी नींबू का रस, पोदीने का रस, प्याज का रस–इनमें से कोई भी पदार्थ, एक वक्त में 10 ग्राम वजन(एक टेबलस्पून) से ज्यादा मात्रा में नहीं लेना चाहिए जब तक कि ऐसा निर्देश न दिया गया हो। शहद 1 या 2 चम्मच लेना चाहिए। घी ताजा और शहद पुराना अधिक गुणकारी होता है। गुड़ भी पुराना ज्यादा गुणकारी होता है।

कब्जनाशक घरेलू नुस्खे

1. मुलहठी का चूर्ण 100 ग्राम, सोंठ चूर्ण 10 ग्राम और गुलाब के सूखे फूल 5 ग्राम, तीनों को एक गिलास पानी में डाल कर उबालें। जब पानी आधा शेष रहे तब उतार कर छान लें। ठण्डा करके सोते समय पिएं। यह नुस्खा कब्जनाशक तो है ही, पेट में जमी हुई आंव को भी निकाल देता है।
2. अजवायन, वायविडंग, निशोथ, सौंफ, काला नमक, छोटी हरड़ सब 10–10 ग्राम। काला दाना 50 ग्राम और सनाय 35 ग्राम। सबको पीस कर मिला लें और शीशी में भर एयर टाइट ढक्कन लगा कर रखें। रात को सोते समय 1 चम्मच चूर्ण गुनगुने गर्म पानी के साथ सेवन करें। इससे सुबह दस्त साफ होता है। चूर्ण की मात्रा अपने कोठे की स्थिति के अनुसार कम ज्यादा कर लें। यही नुस्खा 'कब्जीना चूर्ण' के नाम से बना–बनाया बाजार में मिलता है।
3. डण्ठल रहित सनाय की पत्ती 50 ग्राम, सौंफ 100 ग्राम, शक्कर का पिसा हुआ बूरा 200 ग्राम। सौंफ को तवे पर सेक लें और सनाय की पत्ती के साथ मोटा–मोटा कूट लें। तीनों द्रव्यों को मिला लें। सोते समय 1 या 2 चम्मच या अपनी स्थिति के अनुकूल मात्रा में गुनगुने गर्म पानी के साथ फांक लें। इसे लाभ होने तक सेवन कर बन्द कर दें।
4. त्रिफला 300 ग्राम, काला नमक 150 ग्राम, सनाय 100 ग्राम, अजवायन 100 ग्राम और काली मिर्च 100 ग्राम। अजवायन तवे पर सेक लें। सब द्रव्यों को अलग–अलग कूट पीस कर खूब बारीक करके मिला लें और शीशी में भर लें। सोते समय 1 चम्मच चूर्ण ठण्डे पानी के साथ सेवन करें। इस नुस्खे का प्रयोग कब्ज होने पर ही करें और लाभ होने पर बन्द कर दे।

कब्ज से ग्रस्त पाठक–पाठिकाओं द्वारा भेजे गये पत्रों में, कब्ज का नाश करने के उपाय प्रायः पूछे ही जाते हैं। ऐसी व्याधियों का इलाज भी पूछा जाता है जो कब्ज होने के कारण ही पैदा होती है। यदि कब्ज नष्ट हो जाए तो ऐसी व्याधियां भी स्वतः ही नष्ट हो जाती हैं इसलिए कब्ज होने न देना और यदि हो जाए तो यथाशीघ्र इसे दूर कर देना बहुत जरूरी होता है। शरीर को स्वस्थ और निरोग रखने तथा वात प्रकोप के कारण उत्पन्न होने वाली सभी व्याधियों जैसे जोड़ों का दर्द, पीठ व कमर का दर्द, सिर दर्द, रग–पठ्ठों का दर्द, गृध्रसी (सायटिका) का दर्द, गैस ट्रबल, पेट फूलना, श्वास फूलना, अम्लपित्त (हायपरएसिडिटि) आदि को नष्ट करने के लिए सबसे पहले कब्ज को नष्ट करना जरूरी होता है।

शुभ सूचना

पवमान के सभी सम्मानीय पाठकों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि वैदिक साधन आश्रम तपोवन स्थित चिकित्सालय में आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक एवं ऐलोपैथिक, गायनोकोलोजिस्ट चिकित्सा प्रारम्भ हो गई हैं। इसके साथ ही डेन्टल सर्जन तथा फिजियोथेरेपिस्ट ने भी अपनी सेवायें देना प्रारम्भ कर दिया है। इस चिकित्सालय में आर्य समाज के सन्यासियों एवं आश्रम में कार्यरत सेवकों तथा आश्रम द्वारा संचालित विद्यालय के अध्यापक/अध्यापिकाओं के लिए निःशुल्क चिकित्सा की व्यवस्था की गई है। चिकित्सालय के लिए एक एम्बुलेंस की आवश्यकता है। दानदाता इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

आयुर्वेदिक चिकित्सा

—डॉ० भगवान दाश

सफेद दाग या ल्यूकोडर्मा

इस रोग में त्वचा में किसी भी स्थान पर वर्णकों (त्वचा को रंग देने वाले तत्व) की कमी हो जाती हैं। आयुर्वेद के अनुसार लिवर में कोई विकार होने पर ऐसा होता है, क्योंकि इससे पित्त कम मात्रा में उत्पन्न होता है। इससे त्वचा का यह विशेष स्थान सफेद दिखने लगता है। प्रायः ल्यूकोडर्मा के दागों में किसी प्रकार की शारीरिक तकलीफ नहीं होती। चूंकि इससे व्यक्ति कुरूप—सा दिखाई देने लगता है। अतः रोगी मानसिक रूप से बहुत अधिक परेशान रहता है। यह बीमारी खानदानी भी मानी जाती है। इसलिए इस रोग से पीड़ित रोगी के बच्चों की शादी भी एक समस्या बन जाती है। इस बीमारी को एक प्रकार का सामाजिक कलंक ही माना गया है।

आयुर्वेद में सफेद दागों को कुष्ठ का एक प्रकार माना गया है। कुष्ठ का अर्थ आयुर्वेद में कष्टसाध्य प्रकार की चमड़ी की बीमारियों से है, जिनमें कोढ़ भी शामिल है। चूंकि श्वित्र अथवा सफेद दाग एक प्रकार की कष्टसाध्य बीमारी है, अतः इसे कुष्ठ के अंदर गिना गया है। परंतु कुष्ठ शब्द का अर्थ ठीक प्रकार से न समझने के कारण आम लोग इसे कोढ़ का एक प्रकार मानने लगते हैं और इस प्रकार के रोगी से दूर रहते हैं। जबकि असलियत में सफेद दागों का कोढ़ से किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है।

कभी—कभी ये सफेद चकत्ते लालिमा लिए भूरे रंग के हो जाते हैं और उन पर छोटे—छोटे दाने से निकल आते हैं। इन दानों में बहुत खुजली होती है। बाद में इनसे पानी जैसा रिसाव होने लगता है तथा जलन भी होती है।

आयुर्वेद के अनुसार जोडों की त्वचा और श्लेश्मल झिल्ली पर पाए जानेवाले सफेद दागों का ठीक होना मुश्किल होता है। बूढ़े व्यक्तियों के सफेद दाग भी मुश्किल से ही ठीक हो पाते हैं।

उपचार

ल्यूकोडर्मा का रोग अधिकतर उन लोगों में देखा जाता है, जिनकी पाचन—क्रिया में कुछ गड़बड़ी पाई जाती है। पुरानी पेचिशवाले रोगियों में इस रोग की अधिक आशंका बनी रहती है। यदि रोगी में ये शिकायतें पाई जाएं, तो उपचार करते हुए सबसे पहले पाचन—क्रिया के विकार और पेचिश को दूर करना बहुत आवश्यक हो जाता है। इसके लिए कुटज (कूढ़ा) सबसे अच्छी औषधि है। कुटज वृक्ष की छाल का चूर्ण बनाकर औषधि के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। यह चूर्ण एक छोटे चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार देना चाहिए। आवश्यकता होने पर कुछ दूसरी पाचक और सारक (पेट साफ करनेवाली) औषधियों का सेवन भी कराया जा सकता है।

आरोग्यवर्धनी वटी भी बहुत उपयोगी औषधि है। इसकी 4—4 गोलियां दिन में तीन बार दी जाती हैं। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण औषधि कटुकी है। यह लिवर को अधिक क्रियाशील बनाती व इसके विकारों को दूर करती है। इससे ल्यूकोडर्मा के ठीक होने में सहायता

मिलती है। इस दवाई में ताम्र भस्म भी पाई जाती है। यह धातु मेलानिन नामक वर्णकों के चयापचय और मिश्रण में सहायता करती है।

इस रोग में लिए प्रयोग में आनेवाला एक अन्य उपयोगी औषधि–द्रव्य है– भल्लातक (भिलावा)। इसका प्रयोग अवलेह (चटनी या जैम की तरह की दवाई) बनाकर किया जाता है। इसमें भिलावा के अतिरिक्त कुछ अन्य द्रव्य भी मिलाए जाते हैं। इसका सेवन एक छोटे चम्मच की मात्रा में दिन में दो बार करना चाहिए। इस औषधि के सेवन से शरीर पर कुछ बुरा प्रभाव भी पड़ सकता है। इस बुरे प्रभाव से बचने के लिए पहले से ही कुछ अनुकूल उपाय कर लेने चाहिए। जैसे इस लेह को लेने से पहले मुंह के अंदर की श्लेश्मल झिल्ली अर्थात् पतली त्वचा को घी या मक्खन की तह से ढक लेना चाहिए। जिससे अंदर की कोमल त्वचा इस लेह के सीधे संपर्क में न आने पाए। और यह औषधि लेने के तुरंत बाद ही रोगी को दूध पिलाना चाहिए। इस औषधि के सेवन के दौरान रोगी को गर्म चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए और न ही उसे अधिक गर्मी या धूप में रहना चाहिए। ये सब सावधानियां रखने पर भी यदि रोगी की त्वचा पर दाने या लाली, आदि आती है, तो कच्चे नारियल की गिरी रोगी को खिलानी चाहिए। इससे भिलावा से होने वाले सभी विषैले उपद्रव शांत हो जाते हैं।

सफेद दागों के उपचार के लिए एक अन्य बहुत उपयोगी औषधि है– बाकुची (बावची)। इसका प्रयोग आयुर्वेद और एलोपैथी दोनों में ही प्रचलित है। बावची के बीजों से तैयार किया गया पेस्ट इन दागों पर बाहरी तौर से लगाया जाता है। जबकि इन बीजों से तैयार चूर्ण को खदिर(खैर) और आमलकी (आंवले) के काढ़े में मिलाकर खाने के लिए दिया जाता है। यह चूर्ण आधा–आधा चम्मच दिन में दो बार देना चाहिए। इस रोग की चिकित्सा में गुंजा के साथ पकाया गया तेल भी प्रयोग में लाया जाता है।

आहार

इस रोगी के लिए कड़वे स्वादवाली सब्जियां, जैसे–करेला और कड़वी सहिजन बहुत लाभकारी हैं। रोगी को जहां तक हो सके किसी भी रूप में नमक का सेवन नहीं करने देना चाहिए। नमक से जितना अधिक परहेज रहेगा, औषधियों का असर उतना ही जल्दी होगा। यदि नमक का सेवन बहुत ही जरूरी हो, तो सेंधा नमक ही देना चाहिए और वह भी थोड़ी ही मात्रा में। मसालों और तिक्त पदार्थों का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

अन्य आचार–व्यवहार

रोगी को गर्मी और धूप में अधिक नहीं घूमना चाहिए। इस रोग की उत्पत्ति और वृद्धि के लिए मानसिक विकार भी बहुत हद तक दोषी हैं। अतः रोगी को चिंता, शोक, उतावलापन, क्रोध और अन्य प्रकार के मानसिक दबावों से बचकर रहना चाहिए। रात को अधिक देर तक जागते रहना हानिकारक है। ऊपर बताई गई सभी औषधियां ठीक प्रकार से और शीघ्रतापूर्वक कार्य तभी कर पाएंगी, यदि रोगी को कब्ज की शिकायत न हो। इस कारण कब्ज से बचे रहना बहुत आवश्यक है।

तुलसी द्वारा कुछ घरेलू उपचार

—श्री कमल जी साबू

1. जो व्यक्ति प्रतिदिन तुलसी की मात्र पांच पत्तियों का सेवन करता है, वह अनेकानेक बीमारियों से बच सकता है।
2. प्रातःकाल खाली पेट दो–तीन चम्मच तुलसी के रस का सेवन करने से शारीरिक बल एवं स्मरणशक्ति में वृद्धि के साथ–साथ व्यक्तित्व भी प्रभावशाली होता है।
3. यदि तुलसी की ग्यारह पत्तियों का चार काली मिर्च के साथ सेवन किया जाए तो मलेरिया एवं मियादी बुखार आदि ठीक किये जा सकते है।
4. तुलसी रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को त्वरित नियन्त्रित करने की क्षमता रखती है।
5. शरीर के वजन को नियन्त्रित रखने हेतु भी तुलसी अत्यन्त गुणकारी है। तुलसी के नियमित सेवन से भारी व्यक्ति का वजन घटता है एवं पतले व्यक्ति का वजन बढ़ता है। तुलसी शरीर का वजन आनुपातिक रूप से नियन्त्रित करती है।
6. तुलसी के रस की कुछ बूंदों में थोड़ा–सा नमक मिलाकर बेहोश व्यक्ति की नाक में डालने से शीघ्र होश आ जाता है।
7. चाय बनाते समय कुछ पत्ती तुलसी की साथ में उबाल ली जाए तो सर्दी, बुखार एवं मांसपेशियों के दर्द में अत्यन्त राहत मिलती है।
8. दस ग्राम तुलसी के रसको पांच ग्राम शहद के साथ सेवन करने से हिचकी एवं अस्थमा के रोगी को ठीक किया जा सकता है।
9. तुलसी के काढ़े में थोड़ा सा सेंधा नमक एवं पीसी सोंठ मिलाकर सेवन करने से कब्ज दूर हो जाती है।
10. दोपहर भोजन के पश्चात तुलसी की पत्तियां चबाने से पाचनशक्ति मजबूत होती है।
11. दस ग्राम तुलसी के रस के साथ पाँच ग्राम शहद एवं पाँच ग्राम पिसी काली मिर्च का सेवन करने से पाचनशक्ति की कमजोरी समाप्त हो जाती है।
12. दूषित पानी में तुलसी की कुछ ताजी पत्तियाँ डालने से पानी का शुद्धिकरण किया जा सकता है।
13. प्रतिदिन सुबह पानी के साथ तुलसी की पाँच पत्तियाँ निगलने से कई प्रकार की संक्रामक बीमारियों एवं दिमाग की कमजोरी से बचा जा सकता है और स्मरणशक्ति को मजबूत किया जा सकता है।
14. तुलसी के रस की हल्की गरम बूँदें कान में डालने से कान के दर्द से मुक्ति पायी जा सकती है।
15. चार–पाँच भूनी हुई लौंग के साथ तुलसी की पत्ती चूसने से सभी प्रकार की खाँसियों से मुक्ति पायी जा सकती है।
16. तुलसी के रस में खड़ी शक्कर मिलाकर पीने से सीने के दर्द एवं खाँसी से मुक्ति पायी जा सकती है।
17. तुलसी के रस को शरीर के चर्मरोग से प्रभावित अगों पर मालिश करने से दाद, एग्जिमा एवं अन्य चर्मरोगों से मुक्ति पाई जा सकती है।
18. तुलसी की पत्तियों को नींबू के साथ पीसकर पेस्ट बनाकर लगाने से एग्जिमा एवं खुजली के रोगों से मुक्ति पायी जा सकती है।

तुलसी की मुख्य विशेषता यह है कि यह पुरुषों, स्त्रियों एवं बच्चों सभी के लिए समान रूप से प्रभावशाली है और इसका कोई अन्य दुष्प्रभाव भी नहीं होता है।

मधुमेह के पाँच अनुभूत प्रयोग

लेखक– मनोहर लाल अग्रवाल,
चैम्बुर, मुम्बई

मधुमेह रोग नाश का मेरा यह अनुभूत प्रयोग है। मैं स्वयं बढ़े हुए मधुमेह का रोगी था। इस प्रयोग से मेरा वह रोग जाता रहा। सात वर्ष से आजतक मेरे मूत्र तथा रक्त में कोई दोष नहीं पाया गया। इसीलिये लोक कल्याणार्थ यहाँ लिख रहा हूँ–

बड़े आकार के पाँच सेर करेले (हरी सब्जी) लें। उन्हें लम्बे दाव से बीचोंबीच काटकर एक के दो–दो टुकड़े कर लिये जायँ। फिर किसी कपड़े पर उन्हें सूखने के लिये बिछा दिया जाय। ध्यान रहे उन्हें छाया में सुखाना है। धूप बिलकुल नहीं लगने देनी चाहिए। इनमें से आधे सूख जायेगें और आधे सड़ जायेंगे। जो अच्छी तरह सूख जायें, उनका दानेदार छिलका चाकू से रगड़कर–उतारकर उसे पीसकर बारीक कर लिया जाय। यह बारीक चूर्ण एक तोला प्रातःकाल खाली पेट और एक तोला रत्रि को सोने से पहले पानी पीने के साथ लेना चाहिए। 15 दिन या एक मास लेने से रोग नष्ट हो जाता है। मधुमेह रोग से आगे चलकर हृदय पर आघात तथा रक्तचापवृद्धि रोग हो जाते हैं तथा सृजनात्मक शक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः इस रोग का नाश बहुत आवश्यक है।

उपर्युक्त प्रयोग करते समय प्रतिदिन कम से कम एक माला 'गायत्री मंत्र' का यथाधिकार जप करना चाहिए।

लेखक– डॉ० राम लखन विश्वकर्मा
गया, बिहार

उड़हल (जशवन्ती, जाशौन) के फूल की कलिका मधुमेह का रोगी सबेरे खाली पेट यानी मुँह धोकर एक या दो चबाकर खा जाय। ऐसा एक सप्ताह या रोग अधिक पुराना हो तो एक महीना खाये। यदि अधिक दिन भी खाये तो किसी तरह की खराबी न होगी, वरन् लाभ ही होगा। पेशाब में शर्करा आना बिल्कुल बंद हो जायगा। औषधि सेवन के पहले पेशाब की जाँच करा लें और औषधि सेवन के पश्चात भी पेशाब की जाँच कराकर देख लें। पेशाब में चीनी चाहे जितनी क्यों न आती हो, इससे अवश्य लाभ होगा।

परहेज–चीनी, चावल, और आलू न खायें। वे रोगी जो संसार में हर प्रकार के डॉक्टरी, वैद्यक आदि अन्य प्रकार के इलाज करवाकर निराश हो गये हों, एक बार इसका प्रयोग करें।

लेखक– श्री बजरंगलाल जी सिंघानिया

1– जामुन के हरे पत्ते, 2–हरे नीम के कड़वे पत्ते, 3–बिल्वपत्र के पत्ते तथा 8 तुलसी के पत्ते सब सूखा लेवें। अलग–अलग लेकर समभाग में सूखे पत्तों को पीसकर मिला देवें। रोज चाय की चम्मच से एक

चम्मच पाउडर सुबह पानी से पी लेवें। लेने के पहले कितना शक्कर थी—दस दिन बाद शक्कर की निगह करवा लें—300—400 होगा तो 150 अन्दाजन आ जाना चाहिये। इसे लेते रहने से चीनी शरीर में नियन्त्रित रहती है। कइयों को लाभ हुआ है।

लेखक— डॉ० पन्ना लाल गर्ग, लखनऊ

मधुमेह के लिये मैं अपना अनुभव रख रहा हूँ। मधुमेह के रोगियों को चाहिये कि किसी मिट्टी के पात्र में पावभर शुद्ध कुआँ या गंगाजल रात में रख लें। इसी जल में पलाशपुष्प पाँच नग जो हर जगह आसानी से मिल जाता है, डाल दें। सुबह उस फूल को उसी जल में मलकर छान लें और कुल एक बार में बासी मुँह पी जावें। हर हफ्ते फूल की मात्रा एक—एक करके बढ़ाते जावें। चार सप्ताह में रोग निर्मूल हो जाएगा। अनुराधा नक्षत्र में तोड़े हुए पुष्पों से और भी शीघ्र लाभ होता है। इस प्रयोग से अन्य प्रकार के प्रमेह में भी काफी लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ् तथा पूयमेह (सूजाक) तक के रोग भी ठीक होते देखे गये हैं। अथर्ववेद में भी इसे उत्तम औषधि बताया गया है।

लेखक— श्री परसराम

जिन भाइयों या माता बहनों को मधुमेह का रोग हो, वे सहदेई (सहदेवी) नामक पौधे को खोदकर ले आवें। फिर उसकी जड़ को अलग निकालकर एक तोला एवं एक पाव जल के साथ ऐसा पीस लें कि जिसमें वह जल के साथ एकदम घुल—मिलकर एक हो जाए। उसे सुबह—शाम दोनों समय पी लिया जाए। तीस दिनों में रोग नष्ट हो जाता है। यह अचूक औषधि है। इससे पेट की खराबियाँ, रक्तदोष, ज्वर आदि रोगों से छुटकारा पाने में भी लाभ होता है।

विनम्र अनुरोध

वैदिक साधक आश्रम तपोवन, देहरादून द्वारा संचालित तपोवन विद्या निकेतन जूनियर हाई स्कूल के लिए निम्न सामग्री की आवश्यकता हैः

(1) स्टील की अलमारी — 2 नं.

(2) लायब्रेरी के लिए शीशे के पल्लों वाली स्टील की अलमारी — 3 नं.

(3) कम्प्यूटर लैब के लिए कम्प्यूटर, मॉनिटर, सी.पी.यू., की—बोर्ड, माऊस आदि — 6 सैट

(4) 48 इंच साईज के सीलिंग फैन — 10 नं.

दानी सज्जनों से अनुरोध है कि इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

दमा–एक घातक रोग

–योगाचार्य डॉ० विनोद कुमार शर्मा

आक्सीजन की कमी के कारण श्वास को फेफड़ों में आने में और जाने में घुटन की प्रक्रिया को दमा कहते हैं। यह वायु के रास्ते सिकुड़ जाने के कारण होता है क्योंकि श्वासनलिका का छिद्र जब सिकुड़ने लगता है तब श्वास के भीतर आने–जाने में काफी असुविधा होती है। जब यह रोग बढ़ जाता है तो व्यक्ति को श्वास के भयंकर दौरे पड़ते है। रोगी व्यक्ति बड़ी कोशिश करके श्वास लेता है।

कष्टदायी दमा के लक्षण

दमा धीरे–धीरे उभरता है या एक साथ ही भड़क जाता है इस रोग में पहले खांसी का दौरा भी पड़ता है। श्वास के आवागमन में अड़चन शुरू हो जाती है, दमा की व्रीवता होने पर हृदय की धड़कन और श्वास की गति दोनों बढ़ जाती है। रोगी को बेचैनी व थकान अनुभव होती है। उसे खांसी, सीने में जकड़न बहुत अधिक पसीना व उल्टी भी आ सकती है। श्वास नालियों में श्वास का प्रवाह सही न होने के कारण सांस की ध्वनि आनी प्रारम्भ हो जाती है। दमा के रोगी को रात में सोते समय विशेष परेशानी की सम्भावना होती है।

दमा रोग के कारण

धुम्रपान करना, कब्ज व गैस बने रहना, जुकाम शीघ्र–शीघ्र बनना, खांसी बार–बार होना, संभोग करते समय श्वास फूलना, संभोग बहुत अधिक मात्रा में करना, तले भुने पदार्थों का सेवन अधिक करना, दूध व दूध से बनी वस्तुओं का अधिक मात्रा में सेवन करना, शारीरिक श्रम न करना, शराब का सेवन करना, कोल्डड्रिंक्स का सेवन करना, फास्ट फूड का सेवन करना, लकड़ी व कोयलों के कारखानों में काम करना, दूषित वातावरण में रहना, अधिक नमी(गीली) जगह पर रहना, नंगे पैर रहना, गुटका, तम्बाकू, सुपारी आदि का सेवन करना, छींके आना, श्वास किस्तों में आना, अधिक विषैली दवाओं का सेवन करना, बलगम बने रहना साथ में खांसी आना, थोड़ा चलने पर श्वास फूलना, परफ्यूम आदि का सेवन करना, घरों में अगरबत्ती धूपबत्ती आदि ज्यादा जलाना, मच्छर भगाने वाली वस्तुऐं, धूल के कणों से, मांसाहार के सेवन से, आनुवांशिकता के कारण, अधिक जोर से व लगातार हंसने से।

दमा की समस्या में–योगाभ्यास

दमा फेफडों से सम्बन्धित समस्या है। दमा की समस्या जब होती है तो गला, छाती आदि बहुत ही संवेदनशील रहता है। दमा का रोगी धूल, धुंआ अधिक ठंडा वातावरण सहन नहीं कर सकता है। जहाँ आक्सीजन की समस्या होती है वह वहाँ पर नहीं रह सकता है। उसकी समस्या में स्वतः वृद्धि हो जाती है। योगाभ्यास करने से दमा की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

दमा के रोगी जब योगाभ्यास की ओर कदम बढ़ायें तो सर्वप्रथम उन्हें सन्धि संचालन का अभ्यास करना चाहिए, जोडों की हल्की एक्सरसाईज करनी चाहिए। जब सन्धि संचालन का अभ्यास हो जाये तो आप बैठकर, खड़े होकर, लेटकर किये जाने वाले अभ्यासों को कर सकते हैं। आप दमा की समस्या में निम्न आसनों का अभ्यास करके लाभ उठा सकते है जैसे सिद्धासन, वक्रासन, अर्द्धमत्स्येन्द्रासन, शवासन, पवनमुक्तासन, हलासन। मकरासन में लेटकर भुजंगासन और धनुरासन करें। खड़े होकर पर्वतासन, कटिचक्रासन, और सूर्यनमस्कार भी कर सकते हैं।

दमा में कुछ चमत्कारी प्रयोग

1. ताजा पीपल की छाल का गूदा 50 ग्राम, गुड़ 10 ग्राम, मुलेठी चूर्ण आधा चम्मच को डेढ़ गिलास पानी में इतना पकाऐं कि पानी आधा रह जाये। तब रोगी को वह पानी छानकर गुनगुना रहने पर धीरे–धीरे पिला दें। पुनः इसी प्रकार तैयार करके 5–6 घण्टे बाद पिलायें।

2. गनबां 100 ग्राम, उनाव 100 ग्राम, लसूडे 100 ग्राम, मुलेठी 100 ग्राम, अनारदाना 100 ग्राम, मुनक्के 100 ग्राम, बनफशा 100 ग्राम, रेशाखतमी 100 ग्राम, पीपल छाल सूखी 100 ग्राम। इन सभी की 10 पुड़िया 10–10 ग्राम की बना लें। एक पुड़िया को 2 गिलास पानी में उबालकर काढ़ा बनायें। पानी उबालकर एक गिलास रह जाये। एक गिलास पानी की दो खुराक करके प्रातः व सायं खाली पेट हल्का गरम पिलायें। यह जुकाम, खांसी और दमा के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

3. दो नींबू का रस निकालकर केवल छिलकों को डेढ़ गिलास पानी में पकायें। पानी आधा रहने पर उसकी दो खुराक कर लें। जब दमा में श्वास लेना भारी हो रहा हो अथवा भयंकर जुकाम हो तो रोगी को पिला दें। उस गरम पानी में आधा नींबू रस भी डाल कर पिलायें। यह प्रयोग श्लेश्मा (रेशा) का दुश्मन है। यह प्रयोग रामबाण औषधि का काम करता है।

4. छोटी पीपल चूर्ण शहद संग चाटने से भी लाभ मिलता है।

5. शहद एक अच्छा और शुलभ घरेलू उपचार है जो कि दमा के उपचार में प्रयोग होता है। दमा का अटैक जब आ रहा हो तो शहद वाले पानी से भाप लेने से शीघ्र राहत मिलती है। इसके अलावा दिन में तीन बार शहद को हल्के गुनगुने पानी में मिलाकर पीने से भी बड़ा लाभ मिलता है। शहद बलगम को ठीक करता है जो दमा बनाने में बड़ा सहयोगी होता है।

6. एक कप घिसी हुई मूली में एक चम्मच शहद, आधा नींबू का रस, चौथाई चम्मच काली मिर्च, चौथाई चम्मच पीपली चूर्ण मिलाकर 20 मिनट तक पकायें। इस मिश्रण को हर रोज एक चम्मच खायें। यह इलाज बड़ा ही असरदार है।

7. रात भर एक गरम पानी वाले गिलास में सूखी अंजीर को भिगो कर रख दें। सुबह होते ही इसे खाली पेट खायें। ऐसा करने से बलगम भी ठीक होता है और संक्रमण से भी राहत मिलती है। लगातार करते रहने से कब्ज भी नहीं होती है।

8. अन्दर की एलर्जी को ठीक करने के लिये मेथी भी बहुत असरदार होती है। एक गिलास पानी के साथ आधा चम्मच मेथी के दानों को तब तक उबालें जब तक पानी एक तिहाई ना रह जाये। उस उबले पानी में अदरक का एक चम्मच रस, एक चम्मच शहद मिला लें दिन में दो बार पीने से अवश्य ही राहत मिलती है।

9. दमा के रोग में मुलेठी के पानी से वमन करने से लाभ होता है।

10. मैंने स्वयं अनुभव किया है जिन–जिन दमा के रोगियों को मैंने शुद्धि क्रियाऐं करवाई उनको बड़ा ही भारी लाभ मिला। अतः शुद्धि क्रियाऐं जैसे जलनेति, रबरनेति, तेलनेति अदि अवश्य करें। दमा की समस्या में जुकाम व खांसी से सम्बन्धित सभी उपचार किये जा सकते है।

freedom to work...

Delite Kom Limited

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DELITE KOM LIMITED

Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055

Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 **Fax :** 23620502 **Email :** delite@delitekom.com

ISO 9001 DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020

समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उदयोगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com